

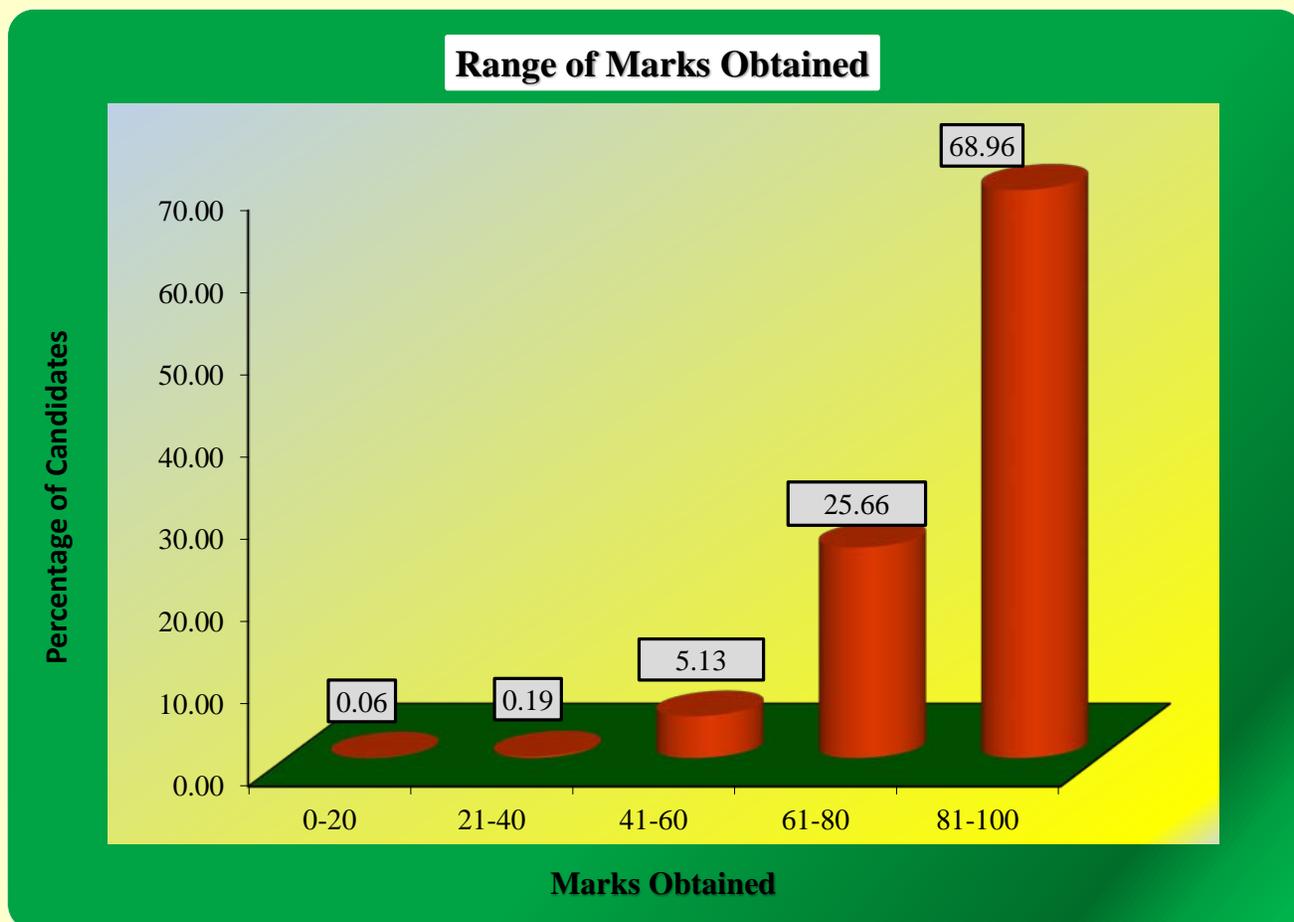
# HINDI

## STATISTICS AT A GLANCE

Total Number of students who took the examination	23,943
Highest Marks Obtained	99
Lowest Marks Obtained	4
Mean Marks Obtained	83.77

### Percentage of Candidates according to marks obtained

Details	Mark Range				
	0-20	21-40	41-60	61-80	81-100
Number of Candidates	14	45	1229	6144	16511
Percentage of Candidates	0.06	0.19	5.13	25.66	68.96
Cumulative Number	14	59	1288	7432	23943
Cumulative Percentage	0.06	0.25	5.38	31.04	100.00



## B. ANALYSIS OF PERFORMANCE

### SECTION A

#### Question 1

Write a composition in Hindi in approximately 400 words on any ONE of the topics given below :-

निम्नलिखित विषयों में से किसी , d विषय पर लगभग 400 शब्दों में fgUhh में निबन्ध लिखिए :-

- “भूकम्प प्रकृति का वह विनाशकारी रूप है जिसकी कल्पना भी मनुष्य-मन को चोट पहुँचाती है।” - इस कथन को ध्यान में रखते हुए उस समय का वर्णन कीजिए जब आपके नगर में भूकम्प आया, उसका आम जन जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा ? आपने तथा आपके साथियों ने राहत कार्यों में क्या योगदान दिया। विस्तार से लिखिए।
- अपराधी को नहीं बल्कि अपराध को समाप्त करने से एक मजबूत राष्ट्र तैयार होता है। इस विषय के पक्ष या विपक्ष में अपने विचार लिखिए।
- “बालश्रम समाज पर एक अभिशाप है।” इस विषय को ध्यान में रखते हुए उन बच्चों की जरूरतों और मजबूरियों पर एक प्रस्ताव लिखिए।
- ‘अहंकार से वृद्धि रुक जाती है।’ इस विचार को अपने जीवन की घटना के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
- ‘योग’ स्वस्थ जीवन का आधार - विवेचन कीजिए।
- निम्नलिखित विषयों में से किसी , d पर मौलिक कहानी लिखिए :—
  - कहानी का अन्तिम वाक्य होगा .....

इस घटना ने मेरा हृदय परिवर्तन कर दिया।

(ii) ‘जहाँ चाह वहाँ राह’ कहावत को आधार बनाकर एक कहानी लिखिए।

#### ijhkdldh fVli f. k k

- इस प्रश्न में छात्रों ने अपने शहर में आए भूकम्प के बदले नेपाल में आए भूकम्प के बारे में लिखा, जिसका प्रभाव उनके नगर पर भी पड़ा पर ज्यादा नुकसान न हुआ। अधिकतर बातें नेपाल में हुई तबाही के बारे में लिखी तथा राहत कार्य में योगदान के लिए भी उन्होंने नेपाल को भेजी जाने वाली सहायता के बारे में लिखा। कुछ छात्रों ने अपने ही नगर के भूकम्प के बारे में लिखा पर राहत कार्य के बारे में विस्तार से नहीं लिखा।
- इस विषय पर अधिकतर विद्यार्थियों द्वारा पक्ष पर अधिक लिखा गया, विपक्ष पर किसी-किसी ने ही लिखा। निबंध में समिक्षित भाव से भी लिखा गया। दोनों पक्षों को नहीं मिलाया। कुछ विद्यार्थियों ने अपराध कितने एवं क्या हैं, इस पर अनावश्यक चर्चा की, जो अपेक्षित नहीं था।

#### अध्यापकों के लिए सुझाव

- अध्यापक विद्यार्थियों को बताएं कि सबसे पहले विषय को ध्यान से पढ़ें तथा मुख्य बिन्दुओं को रेखांकित करें ताकि वे विषय से हटकर न लिखें। विशेषकर ‘आपके नगर में भूकम्प आया’ पंक्ति को ध्यान में रखकर लिखने के लिए कहें, राहतकार्य में अपने एवं अपने साथियों का भी योगदान लिखने के लिए कहें।
- विद्यार्थियों को ये बताया जाए कि इस तरह के विषय में उचित दलीलें देकर अपने विषय-पक्ष/विपक्ष को स्पष्ट करें। किसी अपराधी या अपराध की जानकारी विस्तार से लिखना जरूरी नहीं है। उदाहरणों द्वारा विषय से संबंधित तर्क दें।

- (c) 'बालश्रम समाज पर एक अभिशाप है' - इस विषय पर कुछ बच्चों ने बंधुआ मजदूर की कहानी या 'मधुआ' की कहानी लिखकर सिर्फ एक अनुच्छेद में बालश्रम के बारे में लिखा।
- (d) कुछ बच्चों ने 'रावण' की कहानी द्वारा अपनी बात सामने रखी और कुछ बच्चों ने 'अहंकार से बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है' को आधार मानकर कहानी लिखी। उन्होंने वृद्धि को बुद्धि से जोड़कर अपनी कहानी तो लिखी पर विषय से थोड़ा भटक गए।
- (e) बहुत कम बच्चों ने इस विषय पर लिखा पर जिसने भी लिखा, उसने विषय पर आधारित बातें ही लिखीं। एक या दो बच्चों ने अलग-अलग योगासनों पर विस्तार से चर्चा की।
- (f) (i) इस कहानी में अधिकांश बच्चों ने अपने जीवन की घटना और अपने हृदय परिवर्तन के बारे में लिखा। कुछ बच्चों ने गद्यांश को ही उतारकर उसके साथ अन्तिम वाक्य जोड़कर कहानी समाप्त कर दी।
- (ii) इस विषय पर अधिकतर बच्चों ने सही एवं मौलिक कहानी लिखी। कुछ परीक्षार्थियों ने कहानी तो ठीक लिखी पर कहीं 'जहाँ चाह वहाँ राह' उक्ति नहीं लिखी, अतः उन्हें ये बताया जाए कि उक्ति को आधार बनाएँ पर साथ ही उसे स्पष्ट भी करें।

### अध्यापकों के लिए सुझाव

- बच्चों को बताया जाए कि इस तरह के वर्णनात्मक विषयों में कहानी नहीं लिखनी चाहिए। किसी बालश्रमिक की मजबूरियों एवं जरूरतों पर चर्चा करनी चाहिए न कि उसकी जीवनी के बारे में लिखना चाहिए।
- अपने जीवन की किसी घटना का वर्णन तथा किसी और के जीवन की घटना में अन्तर होता है - ये फर्क बच्चों को समझाया जाना चाहिए। 'रावण' या किसी अन्य के उदाहरण द्वारा अपनी बात स्पष्ट की जा सकती है पर पूरा निबन्ध उस उदाहरण या कहानी में समेटने की कोशिश नहीं करनी चाहिए।
- योगासनों पर विस्तार से चर्चा करने की बजाय, उससे होने वाले लाभों तथा स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव के विषय में विस्तार से चर्चा की जाती, तो विषय और प्रभावी होता।
- बच्चों को ये बताना बहुत जरूरी है कि वे गद्यांश को उतारकर कहानी लिखने की बजाय, अपनी बात स्पष्ट करें। कहानी मौलिक होनी चाहिए।

## **MARKING SCHEME**

### **Question 1**

- (a) भूमिका - जिसमें भूकम्प का अर्थ बताया गया है।  
विषयवस्तु - भूकम्प आने का कारण, उसका जन-जीवन पर प्रभाव, राहत कार्य में योगदान (स्वयं द्वारा तथा साथियों द्वारा)।  
प्रस्तुतीकरण - प्रस्तुत करने का प्रभावशाली ढंग, यथायोग्य स्थान पर उपयुक्त उदाहरणों का प्रयोग आदि।  
भाषा - भाषा की मौलिकता, स्पष्टता, सुबोधता और शुद्धता का ध्यान रखा गया हो।  
डपसंहार - स्वतन्त्र अनुच्छेद में सम्बन्धित विषय पर विचार श्रृंखला को संकुचित करते हुए विराम देना।
- (b) भूमिका - अपराध को परिभाषित करना तथा मानव जीवन और राष्ट्र पर उसका प्रभाव स्पष्ट करना आदि।  
विषयवस्तु - पक्ष/विपक्ष में से किसी एक पर विचार प्रस्तुत करना।  
प्रस्तुतीकरण - उपर्युक्त।  
भाषा - उपर्युक्त।  
डपसंहार - उपर्युक्त।
- (c) भूमिका - बाल श्रम को परिभाषित करना।

विषयवस्त - माता पिता की आर्थिक दुर्बलता, भोजन, वस्त्र आदि का अभाव, जीवन यापन के लिए जीविका का न होना, भरण-पोषण की समस्या के कारण बच्चों को विवशता वश श्रम करना पड़ता है। बच्चे राष्ट्र के भविष्य हैं। उनकी समस्या का समाधान करना, सरकार और प्रबुद्ध एवं समर्थ लोगों का कर्तव्य आदि पर प्रकाश डालना।

प्रस्तुतीकरण - उपर्युक्त।

भाषा - उपर्युक्त।

डपसंहार - उपर्युक्त।

- (d) भूमिका - अहंकार अर्थ स्पष्ट करना। अहंकार प्रगति में बाधक, 'अहंकार की जड़ मुखता में और उसका शिखर (अन्त) विनाश है आदि पर प्रकाश डालना।

विषयवस्त - व्यावहारिक जीवन में घटित किसी घटना के प्रसंग में अहंकार का उल्लेख करते हुए विस्तृत प्रकाश डालना।

प्रस्तुतीकरण - उपर्युक्त।

भाषा - उपर्युक्त।

डपसंहार - उपर्युक्त।

- (e) भूमिका - योग को परिभाषित करना। चित्त की वृत्तियों पर नियंत्रण करने के लिए उपयुक्त श्रम करना, शरीर के अंग प्रत्यंग अच्छी प्रकार से काम करते रहें इस हेतु कुशलता प्राप्त करने का प्रयास, श्रम आदि करना।

विषयवस्त - योग से सम्बन्धित क्रियाओं का नियमित अभ्यास और स्वास्थ्य में संबंध उससे लाभ प्राचीन काल और आधुनिक समय में योग का मूल्यांकन, महत्त्व आदि पर समुचित विस्तृत प्रकाश डालना।

प्रस्तुतीकरण - उपर्युक्त।

भाषा - उपर्युक्त।

डपसंहार - उपर्युक्त।

- (f) (i) कहानी मौलिक होनी चाहिए तथा प्रश्नपत्र में दिये गये निर्देश का पूर्णतः पालन किया गया हो।

(ii) कहानी मौलिक होनी चाहिए तथा प्रश्नपत्र में दिये गये निर्देश का पूर्णतः पालन किया गया हो।

## Question 2

**Read the following passage and briefly answer the questions that follow :-**

निम्नलिखित अवतरण को पढ़कर, अन्त में दिए गए प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए :-

विनम्रता तथा सरलता ऐसे गुण हैं जो हमें सच्चे अर्थों में मनुष्य बनाते हैं। विनम्रता मानव को उसके दिव्य स्वभाव से जोड़ती है। उसे दूसरों के प्रति सहृदय बनाती है। वह सरलता से प्रेरित होकर विपत्ति में पड़े मनुष्यों की मदद करता है। स्वयं अभाव में रहकर भी दूसरों की यथासंभव सहायता करता है। विनम्र व्यक्ति की वाणी बड़ी मधुर होती है। इनके मृदुवचन मन की कटुता को समाप्त करते हैं। वाणी की मिठास के कारण इनके अनेकानेक मित्र बन जाते हैं। लोग इस प्रकार के व्यक्तियों से चाहे जितने भी क्रोध में बात करें, विनम्रता का जादू क्षणभर में क्रोध को शांत कर देता है। अतः इस प्रकार विनम्रता बड़ी सहजता से क्रोध जैसे बड़े मनोविकार पर भी विजय प्राप्त कर लेती है। ये व्यक्ति समाज के लिए मार्गदर्शक बन जाते हैं। इनकी सरलता में जो स्वाभाविकता होती है वह लोगों को सहज ही अपनी ओर आकर्षित करती है। इनका अनुकरण करने का प्रयास सभी करते हैं। जिससे वे भी विनम्रता को अपने जीवन में अपनाकर अपना जीवन सफल बना सकें। ईर्ष्या, द्वेष, घृणा जैसे मनोविकार को पराजित कर पाएं।

अनेक महान विभूतियों का जीवन सरलता तथा विनम्रता का प्रत्यक्ष उदाहरण है। विश्व-प्रसिद्ध दार्शनिक सुकरात शकल से अत्यंत ही कुरूप थे। एकदिन अकेले में वे दर्पण हाथ में लेकर अपना मुंह देख रहे थे, तभी उनका प्रिय शिष्य आया और सुकरात को दर्पण देखता पाकर बहुत आश्चर्य में पड़ गया। वह कुछ बोला नहीं मात्र मुस्कराने लगा। सुकरात ने उससे कहा "शायद तुम सोच रहे हो कि मुझ जैसा असुंदर व्यक्ति आखिर शीशा क्यों देख रहा है?" सुकरात ने उसे समझाया "वत्स शायद तुम नहीं जानते कि मैं यह शीशा क्यों देखता हूँ ? मैं कुरूप हूँ। इसलिए प्रतिदिन शीशा देखता हूँ। शीशा देखकर मुझे अपनी कुरूपता का ज्ञान होता है। मैं अपने रूप को जानता हूँ। इसलिये प्रतिदिन प्रयत्न करता हूँ कि ऐसे, कि ऐसे अच्छे कार्य करूँ जिनसे मेरी यह कुरूपता ढक जाए।" यह सरलता शिष्य के हृदय को छू गई। उसे गहरा जीवन दर्शन बड़ी आसानी से उसके गुरु ने सिखा दिया।

हमें भी अपने जीवन में इस अच्छे गुण को अपनाना चाहिए। यह एक बहुत बड़ी शक्ति है। इससे हम अपने केन्द्र से जुड़ते हैं। हमारी जीवनदृष्टि विशाल तथा भव्य बनती है। हम मानवता को नई ऊँचाई प्रदान करते हैं। हमारी विनम्रता तथा सरलता एक स्वस्थ समाज को जन्म देती है।

**izu %**

- (a) विनम्रता किस प्रकार मनुष्य के स्वभाव को दिव्यता प्रदान करती है? [4]
- (b) सरल तथा विनम्र मनुष्यों की वाणी की विशेषता तथा प्रभाव का वर्णन करें। [4]
- (c) सामान्य लोग सरल और विनम्र लोगों का अनुसरण करने का प्रयास क्यों करते हैं ? [4]
- (d) सुकरात की प्रतिदिन शीशा देखने वाली घटना का वर्णन अपने शब्दों में कीजिये। [4]
- (e) इस गद्यांश से आपको क्या शिक्षा मिलती है ? [4]

## ijklkl dh fVli f. k k

अपठित गद्यांश में अनुच्छेदों का विभाजन विद्यार्थी सही रूप में नहीं कर पाए। जहाँ प्रश्नों के विभाजन हैं, वहाँ उपसंहार या प्रत्येक विभाजन का उत्तर नहीं लिख पाए। अपनी भाषा का प्रयोग कम किया गया। नए शब्दों के चयन की कमी एवं अधिकतर गद्यांश को हूबहू उतार दिया गया।

- (a) इस प्रश्न के उत्तर में अधिकांश परीक्षार्थियों ने सभी बिन्दुओं को स्पष्ट किया। कुछ परीक्षार्थियों ने सिर्फ दो या तीन बिन्दुओं को स्पष्ट किया, जिसके कारण उन्हें पूरे अंक नहीं मिले।
- (b) अधिकांश परीक्षार्थियों ने सभी बिन्दुओं को स्पष्ट किया।
- (c) अधिकांश छात्रों ने दो बिन्दु ही स्पष्ट किए, जिसके कारण उन्हें दो ही अंक मिले।
- (d) इस प्रश्न के उत्तर में कुछ परीक्षार्थियों ने घटना तो लिखी पर उनके (सुकरात) जीवन दर्शन का शिष्य पर क्या प्रभाव पड़ा, इसके बारे में नहीं लिखा।
- (e) इस प्रश्न के उत्तर में परीक्षार्थियों ने गलतियाँ नहीं की। उन्हें लगभग पूरे अंक मिले।

### अध्यापकों के लिए सुझाव

- कथा में वर्णित घटनाओं को संक्षिप्त रूप से लिखने का प्रयास कराया जाए।
- परीक्षार्थियों को समझाया जाय कि सिर्फ गद्यांश को ही न उतारें वरन् अपने शब्दों में भी उत्तर लिखें ताकि विषय से सम्बन्धित बातें यदि गद्यांश में क्रमवार न भी मिलें, तो वे पूरे गद्यांश के आधार पर अपनी बात स्पष्ट कर सकें।
- परीक्षार्थियों को समझाया जाय कि सारी घटना का सार उस अन्तिम वाक्य में ही छिपा है, इसलिए उसके बिना घटना का वर्णन अधूरा रह जाएगा। उस अन्तिम वाक्य का घटना के साथ होना जरूरी है।

## **MARKING SCHEME**

### **Question 2**

- (a) दूसरों के प्रति सहृदय बनाती है, विपद्ग्रस्त मनुष्य की सहायता हेतु प्रेरित करती है, उदार और कारुणिक बनाती है।
- (b) वाणी की विशेषता - मधुर, दूसरों के हृदय को शीतल बनाने वाली तथा मन की कटुता (कडुवाहट) को मिटाने वाली।  
प्रभाव - इसके प्रभाव से अनेक व्यक्ति मित्र बन जाते हैं तथा यह क्रोध जैसे मनोविकार पर विजय दिलाने में समर्थ हैं।
- (c) सामान्य लोग सरल और विनम्र व्यक्तियों का अनुसरण करने का प्रयास करते हैं क्योंकि - उनकी सरलता और विनम्रता स्वाभाविक होती है। उसको अपनाकर लोग अपनी बुराई दूर कर सकते हैं। घृणा, ईर्ष्या, द्वेष जैसे मनोविकारों पर आसानी से विजय पा सकते हैं। स्वयं विनम्र बनकर अपना जीवन सफल बना सकते हैं।
- (d) सुकरात अत्यन्त कुरूप थे। वे प्रतिदिन दर्पण में अपना रूप देखते थे। वे अत्यन्त कुरूप थे फिर भी दर्पण को देखते थे, उन्हें ऐसा करते देखकर उनके एक शिष्य को अत्यन्त आश्चर्य हुआ, अद्भुत दृश्य देखकर वह मुस्कराने लगा। अपने शिष्य के मनोभाव समझकर सुकरात ने उसकी शंका का समाधान करते हुए उससे कहा कि ऐसा करने से मुझे अपनी कुरूपता का बोध होता है, यह सच्चाई जानकर कुरूपता ढकने के लिए अच्छे कार्य करने का हर सम्भव प्रयास करता हूँ।
- (e) हमें प्रतिदिन अच्छे कार्य करने चाहिए। व्यक्ति महान बनता है लोकहित कारी और अच्छे कार्य करने से सुन्दर रूप से नहीं। विनम्रता, सरलता, उदारता और वाणी में मधुरता जैसे गुण धारण करने से व्यक्ति अनुकरणीय, आदर्श और महान बनता है।

### Question 3

(a) **Correct the following sentences :-**

निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए %

[5]

- (i) मुझे आपसे अनेक बातें करनी हैं।
- (ii) हमें अपनी मातृभूमि पर अहंकार है।
- (iii) मेरी बात राकेश हँसी से टाल गया।
- (iv) जो काम करो वह पूरा जरूर करो।
- (v) यह सारा कार्य मैंने करा है।

(b) **Use the following idioms in sentences of your own to illustrate their meaning :-**

[5]

निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करने के लिए वाक्यों में प्रयोग कीजिए :-

- (i) आँच न आना।
- (ii) कान खड़े होना।
- (iii) घी के दीये जलाना।
- (iv) चेहरे का रंग उड़ना।
- (v) राई का पहाड़ बनाना।

## ijklkl dh fli f. k k

- (a) (i) अधिकांश परीक्षार्थियों ने 'ckra तथा 'gk में अनुस्वार नहीं लगाया।
- (ii) इसमें कुछ छात्रों ने 'मातृभूमि' को 'मात्रभूमि' लिखा तथा कुछ ने 'gea पर अनुस्वार नहीं लगाया। अहंकार शब्द को कुछ छात्रों ने सही नहीं किया।
- (iii) कुछ विद्यार्थियों ने 'से' की जगह 'में' का प्रयोग किया, पर अनुस्वार नहीं लगाया। कुछ विद्यार्थियों ने 'हँसी से' की जगह 'हँसकर' लिख दिया।
- (iv) कुछ छात्रों ने 'जो काम करो' के साथ अनावश्यक ही एक नया शब्द जोड़कर उसे एक नया वाक्य बना दिया। जैसे - जो काम 'kq करो, उसे पूरा जरूर करो।
- (v) 'यह सारा' की जगह - 'ये सारा' शब्द का प्रयोग कई छात्रों ने किया तथा 'eas में गलत जगह अनुस्वार लगाया। 'मैंने' - इस तरह लिखा।
- (b) (i) अधिकतर छात्रों ने मुहावरों का अर्थ सही समझा, पर वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियाँ करीं।
- (ii) 'कान खड़े होना' के अर्थ में कुछ छात्रों ने 'कान खड़े करना' लिखा।
- (iii) 'घी के दीये जलाना' को उसके शाब्दिक अर्थ में लिया गया।
- (iv) चेहरे का रंग उड़ना विशेषकर घबराहट की स्थिति में होता है पर अधिकांश छात्रों ने उसे मृत्यु की खबर से जोड़ा।
- (v) ये मुहावरा अधिकांश परीक्षार्थियों ने सही लिखा, पर वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियाँ प्रायः सभी मुहावरों में थी।

### अध्यापकों के लिए सुझाव

- परीक्षार्थियों को अनुस्वार का महत्त्व बताया जाये। अनुस्वार के बिना वाक्य गलत है।
- 'मातृभूमि तथा 'मात्रभूमि' का अन्तर स्पष्ट किया जाना जरूरी है, अहंकार, गर्व तथा अभिमान - इन तीनों शब्दों के सूक्ष्म अर्थ भेद के बारे में भी अध्यापक परीक्षार्थियों को बताएँ।
- अध्यापक इस बात पर विशेष जोर दें कि वाक्य शुद्धि में सिर्फ अशुद्धि दूर करनी है न कि वाक्य ही बदल दिया जाए। वाक्य में नए शब्द नहीं जोड़े जाने चाहिए। जहाँ अशुद्धि हो, सिर्फ उसे सुधारना चाहिए।
- वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों को दूर करने के लिए लिखित अभ्यास की आवश्यकता है।
- किसी बात को सुनकर अपने-आप कान खड़े होना और किसी की बात को सुनने के लिए जानबूझकर कान खड़े करना - ये दो अलग क्रियाएँ हैं - ये अन्तर भी छात्रों को बताया जाना चाहिए।
- मन्दिर में घी के दीये जलाना तथा किसी उपलब्धि या बड़ी खुशी में घी के दीये जलाना में जो अन्तर है उस पर कक्षा में परीक्षार्थियों से चर्चा की जाए।

## MARKING SCHEME

### Question 3

- (a)(i) मुझे आपसे अनेक बातें करनी हैं।
- (ii) हमें अपनी मातृभूमि पर गर्व है।
- (iii) मेरी बात राकेश हँसी में टाल गया।
- (iv) जो काम करो उसे पूरा जरूर करो।
- (v) यह सारा काम मैंने किया है।

- (b) मुहावरों का अर्थ :
- (i) आँच न आना - कोई हानि न होना।  
वाक्य - जो लोग ईश्वर की उपासना करते हैं उन पर कभी कोई आँच नहीं आती।
- (ii) कान खड़े होना - सावधान होना।  
वाक्य - रूपये की बात आते ही लोभी व्यक्तियों के कान खड़े हो जाते हैं।
- (iii) घी के दीये जलाना - खुशी मनाना।  
वाक्य - श्रीराम के वनवास से लौटने पर अयोध्यावासियों ने घी के दीये जलाये।
- (iv) चेहरे का रंग उड़ना - घबरा जाना।  
वाक्य - प्रधानाचार्य को सामने देखकर छात्रों के चेहरे का रंग उड़ गया।
- (v) राई का पहाड़ बनाना - जरा-सी बात को व्यर्थ में बढ़ाना।  
वाक्य - दरवाजा खुला रह जाने की जरा-सी बात को मोहन ने राई का पहाड़ बना दिया।

## SECTION B

dkQ & rjx

### Question 4

कबीरदास के काव्य का विषय क्या था ? उन्होंने अपनी कविता में क्या संदेश दिया है ?

[12<sup>1/2</sup>]

ijhkdldh fVli f. k k

इस प्रश्न के उत्तर में कुछ छात्रों ने सिर्फ कबीर के दोहे और उसका अर्थ लिखकर अपनी बात स्पष्ट की। कुछ छात्रों ने सिर्फ सन्देश लिखा। कबीरदास के काव्य का विषय नहीं लिखा। कुछ ने काव्य का विषय लिखा और कविता में निहित सन्देश नहीं लिखा। कुछ छात्रों ने कबीरदास जी की जगह तुलसीदास जी की सच्ची मित्रता के बारे में लिख दिया। कुछ ने कक्षा बारहवीं में पढ़ाए गए दोहों की जगह कक्षा दसवीं में पढ़ाए गए दोहों की चर्चा की तथा कुछ ने पाठ्यपुस्तक से बाहर के दोहों की चर्चा की।

अध्यापकों के लिए सुझाव

- सबसे पहले परीक्षार्थियों को इस चीज का अभ्यास करवाया जाये कि प्रश्न की माँग के आधार पर उत्तर लिखें। यदि प्रश्न में दो बातें (विषय \$ सन्देश) पूछी गई हैं, तो दोनों पर चर्चा होनी चाहिए।
- यदि कबीरदास एवं तुलसीदास के दोहों को एक साथ तुलनात्मक ढंग से समझाया जाये, उनके विषय, भाषा एवं शब्दावली का अन्तर बताया जाये, तो छात्र दोनों को एक समझने की भूल नहीं करेंगे।
- दोहों का सस्वर वाचन करवाया जाये ताकि बच्चों को दसवीं एवं बारहवीं के दोहों में कोई सन्देह न रहे।

### MARKING SCHEME

#### Question 4

हिन्दी के सन्त कवियों में कबीरदास का सर्वोच्च स्थान है। वे पढ़े लिखे नहीं थे। वे हिन्दी की सन्त काव्य धारा की ज्ञानाश्रयी निर्गुण शाखा के प्रमुख कवि हैं। उनके पदों और साखियों में एक समाज सुधारक का निर्भीक

स्वर सुनाई पड़ता है। उनकी कविता में भावों की गम्भीरता है। कविता करना उनका उद्देश्य नहीं था। वे तो समाज में प्रचलित बुराईयों को अपनी शिक्षा के द्वारा दूर करने का प्रयत्न करते रहे। उनके काव्य का विषय आध्यात्मिक एवं मानवीय प्रेम, गुरु महिमा, अन्धविश्वास का विरोध, मूर्ति पूजा का विरोध एवं सामाजिक बुराईयों का विरोध करना था। यद्यपि वे पढ़े-लिखे नहीं थे, लेकिन समाज तथा उसमें व्याप्त बुराईयों को उन्होंने पूरी तरह समझा और परखा। जो भी बुराई उन्होंने समाज में देखी उसकी ओर कविता के माध्यम से संकेत किया। वे समाज-सुधारक एवं उपदेशक थे। हिन्दू-मुस्लिम एकता का नारा उन्होंने दिया और प्रयास किया कि वे अपने-अपने धर्म में फैली बुराईयों और आडम्बरों को दूर करें।

निर्गुण ब्रह्म की उपासना - कबीर निर्गुण ब्रह्म के उपासक थे, इसलिए उन्होंने कविता में मूर्तिपूजा, कर्मकाण्ड तथा बाह्य आडम्बरों का खुलकर विरोध किया। शास्त्रों का ज्ञान न होने पर भी ईश्वरीय सत्ता का अनुभव किया। उन्होंने बताया कि ईश्वर मनुष्य के अन्दर निवास करता है।

जीव और ब्रह्म, आत्मा और परमात्मा की एकता पर उनका विश्वास था। उनका उपदेश था कि माया के चक्कर में पड़कर मनुष्य ईश्वर को भूल जाता है।

कवि के अनुसार -

माया दीपक नर पतंग, भ्रमि-भ्रमि इतै पड़ंत।

कहै कबीर गुरु ग्यान तें, एक आध उबरंत॥

अर्थात् कबीरदास जी समझाते हैं कि मोह - माया दीपक की लौ के समान होती है तथा मनुष्य को अपनी ओर आकर्षित करती है जिस प्रकार पतंगे को लौ। पतंगा दीपक की लौ के चारों ओर मंडराकर जल-जल कर अपने प्राण त्याग देता है। इसी प्रकार मनुष्य रूपी पतंगा भी सांसारिक मोह-माया में फंसकर रह जाता है, परन्तु सच्चे गुरु का ज्ञान मिल जाय तो कोई एकाध मनुष्य उस माया जाल से उबर सकता है।

बाह्य आडम्बरों का विरोध - कबीरदास बाह्य आडम्बर एवं दिखावे का विरोध करते हुए मनुष्य को सावधान करते हैं कि केवल सिर मुँडवा लेने से अथवा सन्यासी बन जाने से कोई साधु या योगी नहीं बन जाता इससे तो अच्छा है मन मुँडवाओ, मन के विकार दूर करो। सन्यासी बनने का ढोंग करने से अच्छा है कि हम अपने आचरण के द्वारा मन को पवित्र बनाएँ -

केसन कहा बिगाड़िया, जो मूंडै सौ बार।

मन काहे न मूडिए, जामें भरा विकार॥

जाति - पाँति का विरोध -

समाज में फैली जाति-पाँति तथा छुआछूत का घोर विरोध किया। कवि के अनुसार -

जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।

मोल करो तलवार का, पड़ा रहने दो म्यान।

अर्थात् कबीरदास जी कहते हैं कि साधु एवं सज्जन व्यक्ति की जाति नहीं, बल्कि उसका ज्ञान जानना चाहिए। क्योंकि साधु का ज्ञान हमारे लिए उपयोगी होता है न कि उसकी जाति। म्यान को देखकर तलवार का अन्दाजा नहीं लगाया जा सकता, क्योंकि तलवार की कीमत उसकी तेज धार से होती है न कि बहुमूल्य म्यान से। इसी प्रकार साधु की जाति के आधार पर उसकी सज्जनता का अनुमान नहीं लगाया जा सकता। कबीर अपने दोहों में गुरु का महत्व ब्रह्म से भी भी बढ़कर मानते हैं। सच्चे गुरु की महिमा असीम है। उसने हमारे ऊपर अनेक उपकार किए हैं। कवि के अनुसार -

सतगुरु की महिमा अनंत, अनंत किया उपकार।

लोचन अनंत उघाड़िया, अनंत दिखावन हार।

कबीरदास जी ने समझाया है कि सच्चे ज्ञान से, जो सतगुरु से मिलता है, संसार से मुक्ति संभव हो सकती है। क्योंकि संसार में माया-मोह मनुष्य को अपनी ओर आकर्षित करती है। गुरु ने हम पर अनेक उपकार किए हैं, हमारी आत्मा को प्रकाशित कर उन्होंने हमें दिव्य दृष्टि दी है, जिसके कारण ही हमें ईश्वर के दर्शन हो पाए। इसी प्रकार कहा जा सकता है कि यद्यपि कबीर ने भक्ति तथा नीति सम्बन्धी दोहे लिखे हैं किन्तु उनका उद्देश्य केवल दोहों की रचना नहीं था। वह अपने काव्य के माध्यम से सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करना चाहते थे। उनका काव्य भक्ति पर आधारित है किन्तु वे मूर्ति पूजा के विरोधी हैं। वे सच्चे धर्म निरपेक्ष सन्त थे। उन्हें किसी भी धर्म के प्रति मोह नहीं था। उन्हें सभी धर्मों की अच्छाइयों से प्रेम था तथा सभी धर्मों के दोषों की वह खुलकर बुराई भी करते थे। वे मानवीय करुणा से युक्त, निर्भीक और अक्खड़ स्वभाव के थे। अनपढ़ होने के बावजूद अनेक महत्वपूर्ण विषयों का अत्यन्त सुन्दर और वास्तविक चित्रण उन्होंने अपनी कविता में किया है। युग को नई दिशा देने की दृष्टि से कबीर का विशेष महत्व है।

### Question 5

‘सीधी रखते अपनी रीढ़’ पंक्ति का भाव स्पष्ट करते हुए बताइये कि ‘मैं हूँ उनके साथ’ कविता के [12<sup>1/2</sup>] अनुसार किस प्रकार के लोगों को सफलता प्राप्त होती है ?

#### ijhkdldh fVli f. k k

इस प्रश्न के उत्तर में कई परीक्षार्थियों ने ‘सीधी रखते अपनी रीढ़’ पंक्ति का अर्थ स्पष्ट नहीं किया। उन्होंने कविता की पंक्तियों के आधार पर अपनी बात अच्छे से स्पष्ट की पर ‘सफलता’ किनके साथ है, इसे वे स्पष्ट नहीं कर पाए। ‘मैं’ को कुछ ने ‘कवि’, कुछ ने ‘सफलता’ तथा कुछ ने ‘हिम्मत’ के रूप में बताया।

#### अध्यापकों के लिए सुझाव

- सबसे पहले प्रश्न की भाषा को रेखांकित करने के लिए बताना चाहिए।
- प्रश्न के **nks** मुख्य भाग थे -
  - पंक्ति का भाव स्पष्ट करना,
  - किस प्रकार के लोगों को सफलता प्राप्त होती है।
- दोनों ही बिन्दुओं पर चर्चा की जानी चाहिए।
- यदि कविता के चार पद्यांश हैं, तो चारों का वर्णन आवश्यक है।
- यहाँ ‘मैं’ से अभिप्राय क्या है, इसे अच्छी तरह समझाया जाना चाहिए।

### MARKING SCHEME

#### Question 5

‘मैं हूँ उनके साथ’ कविता के कवि हरिवंशराय बच्चन जी हैं। इनकी कविताओं में जीवन की अनुभूतियों की सहज अभिव्यक्ति हुई है। ये आस्थावादी कवि हैं।

‘सीधी रखते अपनी रीढ़’ अर्थात् जो स्वाभिमानी होते हैं, वे अपनी सही बात पर अड़े रहते हैं। अपने सही अधिकारों के लिए संघर्ष करते हैं। उन्हें छोड़ नहीं सकते। वे सिर झुकाकर अत्याचार नहीं सहते बल्कि उसका मुँह तोड़ जवाब देते हैं।

कवि का मानना है कि ऐसे व्यक्ति चाहे अकेले हों या भारी भीड़ या बहुमत उनके साथ हो, न्याय के लिए उनका संघर्ष चलता ही रहता है। ऐसे व्यक्ति मार्ग में आने वाली पर्वत के समान मजबूत बाधाओं को चुनौती अपने मजबूत कंधे टकराकर ही देते हैं।

‘पथ की बाधाओं को जिनके पाँव चुनौती देते हैं वे हर दशा में निर्भय होकर अपने विचार प्रकट करते हैं। ऐसा करते समय सांसारिक बँधनों की जंजीर भी उन्हें रोक नहीं पाती। बड़े से बड़ा अत्याचारी ऐसे हृदय चरित्र वाले व्यक्तियों के इरादे को नहीं बदल सकता।

“जिनको बाँध नहीं सकती है,  
लोहे की बेड़ी जंजीर।।”

कवि के अनुसार ऐसे व्यक्ति अपने सिर पर रखे छप्पर पर जलता अंगारा रखकर चलने में भी न तो झिझकते हैं और न डरते हैं। वे तो प्राणों की बाजी लगाकर अपनी पराजय को निश्चित विजय में बदलने की शक्ति रखते हैं। ऐसे व्यक्ति तूफानी समुद्र में एक बार कूदने के बाद आगे ही बढ़ते रहना पसन्द करते हैं। उन्हें मार्ग की बाधाओं से कोई भय नहीं रहता।

“कूद उदधि में नहीं पलटकर,  
जो फिर ताका करते तीर।।

अतः उपर्युक्त कथनों के आधार पर कहा जा सकता है कि स्वावलंबी, दृढ़ प्रतिज्ञ, साहसी, ‘पुरुषार्थी मनुष्य को ही जीवन में सफलता मिलती है। धैर्य और संयम उनके जीवन के अभिन्न अंग होते हैं।

## Question 6

‘ओ नभ में मँडराते बादल’ कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि कवि बादल से क्या आग्रह कर रहा है ? बताइये कि वर्षा के अभाव में मानव-जीवन को तथा प्रकृति को किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है ? [12<sup>1/2</sup>]

### ijhkl dh fVli f. k k

इस प्रश्न में भी दो मुख्य बिंदु थे - कवि का बादलों से आग्रह, तथा वर्षा के अभाव में मानव तथा प्रकृति पर पड़ने वाला प्रभाव (कठिनाई)। कुछ छात्रों ने सिर्फ कविता का सरलार्थ लिख दिया, जिसमें कहीं-कहीं जनजीवन तथा प्रकृति को होने वाली कठिनाइयाँ आई पर बादलों से आग्रह वाला पक्ष ज्यादा प्रभावी रहा। कुछ छात्रों ने वर्षा के अभाव वाली बात लिखी ही नहीं।

### अध्यापकों के लिए सुझाव

- दिशानिर्देश दिया जाए कि प्रश्न के मुख्य बिन्दुओं को ध्यान से पढ़कर उन्हें रेखांकित करें तथा उसी के अनुरूप उत्तर लिखें।
- प्रश्न के किसी पक्ष को अनदेखा न करें। प्रश्न को ध्यान से पढ़ें एवं सभी बिन्दुओं पर चर्चा करें।

## MARKING SCHEME

### Question 6

‘ओ नभ में मँडराते बादल’ कविता रामेश्वर शुक्ल अंचल जी द्वारा रचित है। आरम्भिक काल में इन पर छायावाद का प्रभाव पड़ा। लेकिन इन्होंने अपनी एक अलग छवि विकसित की। इनकी कविता का स्वर कल्पना नहीं बल्कि सत्य पर आधारित था। जो प्रगतिवाद एवं छायावाद के पथ से गुजरता हुआ नई कविता की ओर उन्मुख हुआ है। प्रस्तुत कविता में कवि बादलों को सम्बोधित करते हुए उनसे बिना बरसे न जाने का आग्रह कर रहे हैं।

कवि आकाश में मँडराने वाले बादलों से आग्रह कर रहे हैं कि वे धरती पर बरस जाएँ जिससे लोगों के होंठों की मुस्कान वापस लौट आए। गर्मी के कारण लोगों के जीवन में आनन्द का रस सूख गया है। कवि कहते हैं कि बादल, तू पूर्व दिशा से आनेवाली पुरवैया को टंडक से भर दे जिससे चारों ओर सुख ही सुख फैल जाएँ। जो फूल गर्मी के कारण सूख चुके हैं, पानी बरसा कर उनकी हरियाली लौटा दें। कवि के शब्दों में कृ पुरवा की लहरों में सुख की आतुरता उमगा।

सूखे सुमनों की हरियाली का आभास दिखा।

कवि बादल से आग्रह कर रहे हैं कि तुम क्षितिज पर काले-काले काजल की तरह शीतलता प्रदान करो अर्थात् जिस प्रकार आँखों का काजल आँखों को ठंडक प्रदान करता है उसी प्रकार क्षितिज पर काले बादल की रेखा देखकर लोगों को शीतलता का आभास होगा और इस वर्ष की पहली वर्षा का झोंका लेकर आओ ताकि इस जलती हुई धरती की तपन शांत हो सके। भीषण गर्मी के कारण धरती प्यासी है। वह किसी तरह अपनी प्यास को रोके हुए है। अब उसकी प्यास असहनीय हो गई है। अतः हे नभ में मँडराते बादल ! अब बिना बरसे हुए वापस मत चले जाना ! कवि इन प्रभावशाली शब्दों में कहते हैं कृ

आज वर्ष की पहली वर्षा का पहला झोंका।

इतने दिन धरती ने प्रखर पिपासा को रोका।

ओ नभ में मँडराते बादल बे बरसे मत जा।।

कवि को प्रकृति की दयनीय दशा का आभास है। वह देख रहे हैं कि कहीं धरती प्यासी है तो कहीं फूल सूखे हुए हैं, पर्वत-वन सभी गर्मी की आग में जल रहे हैं। कवि को ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे पर्वत बेचैनी से जल की बूंदों के लिए आकाश की ओर देख रहे हैं और वे बादलों से प्राण-रक्षा की गुहार कर रहे हैं। प्यास के कारण उनका मन भी जलने लगा है तथा नदी के किनारे पानी के लिए मचल रहे हैं। अतः कवि बादलों से बरसने का आग्रह कर रहे हैं। कवि के शब्दों में धरती की दयनीय दशा का चित्रण इस प्रकार हुआ है -

कब से आतप दग्ध वनों के प्राण पुकार रहे।

मन जलता है जैसे तृष्णा का क्षण जलता है।

सूखे मूल कगारों का वीरान मचलता है।

वर्षा ऋतु के आगमन पर आकाश बादलों से आच्छादित है। लगता है मानों लोगों के मधुर स्वप्न आकाश में छा गए हैं। सूखे पत्तों की जो मर्मर की आवाज है वह भी गीतों की ध्वनि में बदल रही है। कवि कहते हैं कि बादलों के आकाश में छाते ही प्रकृति में एक उन्मादक वातावरण छा गया है और लोग पागलों की भाँति प्रसन्न हो रहे हैं। अतः कवि बादलों से बरस पड़ने का आग्रह कर रहे हैं जिससे लोगों की आशाएँ खुशी में बदल जाएँ।

बादलों को देखकर रेगिस्तान में भी लोगों की आशाएँ भाँप बनकर उड़ने लगी हैं। अर्थात् रेगिस्तान के लोगों में भी आशा का भाव जाग गया है। गर्मी के कारण धरती का रोम-रोम प्यास के कारण जल रहा है -

जाग उठी मरु-मरु में सुख की वाष्पाकुल आशा।

इस निदाघ से जला प्रकृति का रोम-रोम प्यासा।

कवि को ऐसा प्रतीत होता है मानो सायंकालीन धूप भी बेचैन होकर जल की इच्छा कर रही है। शीतल छाँह की बाँहों के लिए तरस रही है। बादलों के छा जाने से अँधेरा छा गया है। ऐसे में पक्षी मानों अपने घोंसलों में जाने को व्याकुल हैं। उनकी परछाइयाँ भी नहीं दिखाई दे रही है। कवि बादलों से बड़े याचना भरे स्वर में कहते हैं कि जलधर ! तुम्हें खेत-खलिहानों, मुँडेरों और घर-घर में हम जैसे असंख्य तृषित जन बड़ी आशा से देख रहे हैं। अतः हे बादलों ! तुम बिना बरसे मत जाना -

खेतों खलिहानों, मुँडेरों पर छत पर, घर-घर,

हेर रहे अगणित हम तुमको जल वाले जलधर।

वर्षा के अभाव में जीवन को तृप्ति नहीं मिलती। वर्षा के अभाव में जन-जीवन अधूरा है। जल की एक-एक बूँद मानव ही नहीं संसार के हर प्राणी तथा प्रकृति के लिए भी अमूल्य होती है। यदि वर्षा न हो तो नदियों, पहाड़ों, वनों का अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा। अतः कवि बादलों से बरसने के लिए विनती कर रहे हैं ताकि जीवन को तृप्ति मिल सके क्योंकि जलती बालू पर यौवन का फूल नहीं खिल सकता अर्थात् इतनी गर्मी को सहन करना सभी के लिए कठिन होता है। धरती के तन-मन को शीतलता प्रदान करने के लिए बादलों का बरसना आवश्यक है -

तुम बरसो फिर से धरती का, ? तन शीतल हो ले।  
तुम बरसो मन की थकान का, मन मिसरी घोले।  
ओ नभ में मँडराते बादल बे बरसे मत जा।

जिस प्रकार ज्वर से जलते शरीर पर चन्दन का शीतल लेप कर दिया जाय, प्यास से दम तोड़ते पक्षी के मुख में जल बिन्दु डाल दिया जाएँ, तो एक नया जीवन मिल जाता है। उसी प्रकार, वर्षा भी सूर्य की प्रचण्ड किरणों से तप्त और गर्म लू से संतप्त धरा के लिए नवजीवन का संदेश लेकर आती है। जल को शायद इसीलिए जीवन कहा जाता है।

वर्षा के अभाव में तपती दोपहरी में सूर्य की किरणें दूर-दूर तक आग बरसाती है। छाया का कहीं नाम तक नहीं होता। पशु-पक्षियों के कंठ सूख जाते हैं। नदी, सरोवर, पेड़ पौधे सूख जाते हैं। धरती के होंठ भी वर्षा के अभाव में शुष्क हो जाते हैं, शीतल छाया और शीतल पवन भी इस गर्मी में घबरा कर कहीं लुप्त हो जाती है। इस जलती हुई धरती पर अमृत बरसाने के लिए वर्षा होना आवश्यक है। वर्षा धरती को जीवन देती है। जब उसकी करुणा बरसती है तो धरती पर अन्न उपजता है और मानव एवं पशुओं का पालन होता है। यह सरोवरों और सरिताओं को जल से भर देती है। जो अन्न पैदा होता है वह वर्ष भर हमारे उपभोग में आता है। अब तो इस जल से बिजली भी बनाई जाती है। यदि वर्षा न हो तो मनुष्यों और प्रकृति को उपरोक्त कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। वर्षा के समय पर न होने से प्रकृति में अव्यवस्था फैल जाती है। अतः कह सकते हैं कि वर्षा का मानव जीवन और प्रकृति के लिए विशेष महत्व है।

## fueZk

### Question 7

“ईश्वर को मंजूर ही नहीं था यह लक्ष्मी मेरे घर आती, नहीं तो क्या यह वज्र गिरता।” — यह [12<sup>1/2</sup>]  
किसने, किस अवसर पर कहा ? पूरे घटनाक्रम पर प्रकाश डालिए।

### i j h k d l a d h f v i f. k k

कुछ परीक्षार्थियों ने उदयमानु एवं कल्याणी के विवाद तथा उदयमानु की मृत्यु वाली घटना का ज्यादा विस्तार किया और पण्डित मोटेराम तथा भालचन्द्र सिन्हा के बीच हुए वार्तालाप को सिर्फ कुछ वाक्यों के साथ स्पष्ट किया। कुछ छात्रों ने भालचन्द्र सिन्हा की जगह रंगीलीबाई का नाम लिखा और पूरा वर्णन उसी के आधार पर किया। कुछ छात्रों ने पूरा घटनाक्रम ही बदलकर विषयान्तर कर दिया।

### अध्यापकों के लिए सुझाव

- उपन्यास पढ़ाते समय घटना के प्रसंग व संदर्भ को किस प्रकार लिखना चाहिए, समझाना चाहिए। किस घटना का कब और कैसे वर्णन करना है, अच्छी तरह से बच्चों को बताना चाहिए।
- बच्चों को भूमिका व लेखक परिचय भी देना सिखाना चाहिए।
- विषय स्पष्ट करने के लिए छात्रों द्वारा पाठ पढ़कर पुनरावृत्ति करवाई जानी चाहिए।

## MARKING SCHEME

### Question 7

हिन्दी उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द हिन्दी के एक सर्वकालीन श्रेष्ठ साहित्यकार है। उनकी रचनाओं में अधिकांशतः ठेठ ग्रामीण परिवेश का चित्रण मिलता है, अपनी प्रसिद्ध कृति 'निर्मला' में लेखक ने समाज में व्याप्त दहेज जैसी कुप्रथा पर कुठाराघात करते हुए उसके दुष्परिणामों से अवगत कराया है।

यह कथन भालचन्द्र सिन्हा ने पुरोहित मोटेराम से उस समय कहा है जब वे कल्याणी द्वारा भेजे गये पत्र को देखकर उनसे उनके पुत्र व निर्मला के बारे में यह निवेदन करने आये थे कि वे बारात में कम से कम आदमी लायें जिससे कल्याणी उनका स्वागत, सत्कार उचित ढंग से कर सके।

‘निर्मला’ उपन्यास के एक प्रमुख पात्र भालचन्द्र सिन्हा एक दहेजलोलुप व्यक्ति हैं। उपन्यास के प्रथम अध्याय में ही उनके दर्शन होते हैं, जब उदयभान भालचन्द्र के बेटे भुवन मोहन से अपनी बेटी निर्मला के विवाह के लिए उनसे मिलते हैं। भालचन्द्र उदयभान लाल के सामने अपनी दरियादिली प्रदर्शित करते हुए कहते हैं कि - “आपकी खुशी हो तो दहेज दें या न दें, मुझे इसकी परवाह नहीं।” उनके वाक्य पटुतापूर्ण आश्वासन को सुन उदयभान फूले नहीं समाते।

पर विधाता को कुछ और ही मंजूर था। घर पर विवाह की तैयारियाँ आरम्भ हो जाती हैं। उदयभान खर्च का हिसाब लगा रहे हैं। इसी बीच उनकी पत्नी कल्याणी के साथ विवाह के खर्च को लेकर नॉक-झोंक प्रारम्भ हो जाती है। इसी वाद-विवाद के चलते उदयभान रुष्ट होकर घर से निकल जाते हैं और मतई नाम के एक बदमाश के हाथों मारे जाते हैं। उस बदमाश को उन्होंने एक केस में तीन साल की सजा कराई थी।

पति की आकस्मिक मृत्यु से कल्याणी की तो जैसे दुनिया ही उजड़ गई। वह स्वयं को पति की घातिका मान बैठती है। उसके सम्मुख निर्मला के विवाह की समस्या उत्पन्न हो जाती है और वह निर्णय लेती है कि जब विवाह की तैयारियाँ लगभग पूरी हैं तो विवाह में विलम्ब करना ठीक नहीं। वह भालचन्द्र को शोक सूचना के साथ विवाह करने हेतु पुरोहित मोटेराम के द्वारा सन्देश भिजवाती है -

“इस अनाथिनी पर दया कीजिये और डूबती हुई नाव को पार लगाइये।” परन्तु उसे क्या पता था कि वे मनुष्य नहीं, मनुष्य के रूप में बहुरूपीये हैं।

पुरोहित मोटेराम बाबू भालचन्द्र के पास लखनऊ पहुंचते हैं, उन्हें देखते ही भालचन्द्र कुर्सी से उठ कर स्वागत का ढोंग रचाते हुए बोले

“अख्खाह ! आप हैं ? आइए-आइए। धन्य भाग।” और पण्डित जी से उदयभानु के घर की कुशल पूछते हैं। मोटेराम के मुँह से यह सुनकर कि “सारा घर मिट्टी में मिल गया।” वह भी शोक प्रकट करते हुए कहते हैं - “अब और क्या मिट्टी में मिलेगा ? इससे बड़ी और कौन विपत्ति पड़ेगी ? बाबू उदयभानु से मेरी पुरानी दोस्ती थी, आदमी नहीं हीरा था।” आँखे पोंछते हुए आगे कहते हैं - मेरा तो जैसे दाहिना हाथ ही कट गया। ..... जब से यह खबर सुनी है, आँखों में अँधेरा-सा छा गया है। ..... उनकी सूरत आँखों के सामने खड़ी रहती है।”

भालचन्द्र उदयभानु के लिए जिस तरह के शोकपूर्ण वाक्यों का प्रयोग करते हैं उन्हें सुनकर तो अच्छे-अच्छे लोग भी उनके दिल की गन्दगी व चालाकी को न समझ पाएँ कि इन शब्दों के पीछे क्या रहस्य है अथवा भालचन्द्र के मन में इस समय क्या चल रहा है। वह मोटेराम से कहते हैं - “ऐसा आदमी लाख-दो-लाख में एक होता है ....आप समझिन से कह दीजियेगा, मुझे दिली रंज है।”

पण्डित मोटेराम भी उनकी वाक्पटुता से छले जाते हैं। वह भालचन्द्र से कहते हैं - “आपसे ऐसी ही आशा थी आप जैसे सज्जनों के दर्शन दुर्लभ हैं। नहीं तो आज कौन बिना दहेज के पुत्र का विवाह करता है।”

भालचन्द्र उदयभानु के लिए चाशनी में पगी ऐसी बातें करते हैं कि मोटेराम उन्हें एक नेक व्यक्ति मान बैठते हैं। भालचन्द्र “दहेज लेना और देना दोनों बुरा है” कहते हुए दहेज लोभियों की बातों ही बातों में धज्जियाँ उड़ा देते हैं। उनकी वाक्पटुता को लेखक ने इस प्रकार दर्शाया है - “पूछो, आप लड़के का विवाह करते हैं कि उसे बेचते हैं ?....

यह क्या कि कन्या के पिता का गला रेतिये। नीचता है, घोर नीचता ! मेरा बस चले तो पाजियों को मार दूँ।” भालचन्द्र ने स्पष्ट न नहीं की, पत्नी रंगीलीबाई से सलाह-मशविरा किया, जिन्होंने पत्र पढ़कर भावुकता में बहते हुए वहीं विवाह करने को जोर डाला। फिर भालचन्द्र की इच्छा न देखते हुए रंगीलीबाई ने भुवन मोहन से

पूछने को कहा तो उसने टका सा जवाब दिया कि जब वकील साहब रहे ही नहीं तो वहाँ विवाह करने से क्या लाभ ? मेरी तो शादी ऐसी जगह करवाइये कि खूब रुपया मिले और न सही, एक लाख का डौल तो हो। यह सुनकर रंगीली ने बुरा-भला कहा तो यहाँ तक कह दिया - "कि जो गरीब है, उसे गरीबों के यहाँ सम्बन्ध करना चाहिए।"

पुरोहित मोटेराम भालचन्द्र की बातें सुनकर उनके झाँसे में आ जाते हैं। वह उन्हें धार्मिक व बुद्धिमान व्यक्ति समझ बैठते हैं। वह कहते हैं -

"बस अब आप ही उबारें तो हम उबर सकते हैं।" भालचन्द्र आँखें बन्द कर फिर से दुःखी होने का नाटक करते हैं। वह विवाह के लिए स्पष्ट इन्कार नहीं करते। उन्हें मालूम है कि उदयभानु के घर से अब अधिक आशा व्यर्थ है, अतः वह बड़ी चतुराई दिखाते हुए कहते हैं -

"ईश्वर को मंजूर ही न था कि वह लक्ष्मी मेरे घर आती नहीं तो क्या यह वज्र गिरता ?"

उदयभानु की झूठी दोस्ती का वास्ता दिखाकर वह कहते हैं कि मेरी आँखों के सामने उनकी सूरत नाचती रहती है। यदि उनकी कन्या यहाँ ले आऊँ तब तो मेरा जिन्दा रहना कठिन हो जाएगा। रोते-रोते मेरी आँखें फूट जाएंगी, उस अनाथ बालिका को देखकर मेरा कलेजा फट जाएगा। मोटेराम उनसे कहते हैं आप ही अब उसके पितातुल्य हैं अब वही आपकी कन्या हैं अतः पाणिग्रहण करा लीजिये। बाबू भालचन्द्र समझ जाते हैं कि पण्डित जी व्यवहार नीति में चतुर हैं, अतः वह दूसरे प्रकार से अपनी बात कहने का प्रयत्न करते हैं कि - "वह मृत्यु एक प्रकार की अमंगल सूचना है जो विधाता की ओर से हमें मिली है। .... ऐसी दशा में आप ही सोचिए यह संयोग कहाँ तक उचित है ? विधाता स्पष्ट रूप से कह रहा है कि यह विवाह मंगलमय न होगा। आप समधिनि साहिबा को समझाकर कह दीजियेगा कि मैं उनकी आज्ञा का पालन करने को तैयार हूँ लेकिन इसका परिणाम अच्छा न होगा। स्वार्थ के वश में होकर मैं अपने परम मित्र की सन्तान के साथ अन्याय नहीं कर सकता।"

इस प्रकार ईश्वर की आड़ लेकर अपनी वाक्पटुता से भालचन्द्र सिन्हा ने दहेज के लाभ में पड़कर निर्मला के रिश्ते को अस्वीकार तो कर दिया, परन्तु पुत्र का विवाह एक धनी परिवार में कराने के बावजूद वे कभी सुख से न रह सके। निर्मला के रिश्ते को अस्वीकार करने की पीड़ा उन्हें सालती ही रही।

## Question 8

"मंसाराम अपने सिद्धान्तों पर चलने वाला युवक है, जिसके कारण वह जीवन भर कष्ट भोगता है।" [12<sup>1/2</sup>]  
इस कथन के आधार पर मंसाराम का चरित्र-चरित्र कीजिए।

### ijhkdldh fVli f. k k

कुछ परीक्षार्थियों ने सिर्फ मंसाराम के सिद्धान्तों के आधार पर पूरी कहानी लिख डाली। कुछ ने सिर्फ उसकी चारित्रिक विशेषताएं लिखीं। दोनों पक्षों को बहुत कम ही परीक्षार्थियों ने समेटा।

### अध्यापकों के लिए सुझाव

- परीक्षार्थियों को ये समझाया जाए कि जब कोई कथन या उक्ति दी गई हो, तो उसके आधार पर पात्र का चरित्र चित्रण करें या फिर चरित्र चित्रण करने के बाद उस कथन को उदाहरण द्वारा पुष्ट करें।

## MARKING SCHEME

### Question 8

‘निर्मला’ उपन्यास यद्यपि एक दुखान्त कहानी है लेकिन कथानक पाठकों को सोचने पर विवश कर देता है। इस उपन्यास में प्रत्येक पात्र के चरित्र तथा उसकी विशेषताओं को पूरी तरह उजागर किया गया है। पात्रों का चरित्र-चित्रण पात्रों के स्वभावानुकूल किया गया है। इन चरित्रों को पढ़ने के उपरान्त पाठक सोचने लगता है कि ऐसी परिस्थितियों में अमुक पात्र और क्या करता। पात्रों की स्थिति कथानक को गति प्रदान करती है।

मंसाराम तोताराम का सबसे बड़ा पुत्र है जो उसकी दूसरी पत्नी निर्मला का हमउम्र है। उसकी आयु सोलह वर्ष है। वैसे तो वह निर्मला का हमउम्र है, परन्तु मानसिक विकास में वह पाँच साल छोटा है, वह इकहरे बदन का सुन्दर, होनहार व हँसमुख स्वभाव का बालक है, सांसारिकता का उसे कोई अनुभव नहीं है। आत्म-सम्मान उसके चरित्र की मुख्य विशेषता है। जब उसके पिता द्वारा उस पर शक किया जाता है तो मंसाराम अपने जीवन को धिक्कारता है। वह अपने पिता के शक को दूर करने के लिए अपना जीवन ही बलिदान कर देता है। क्योंकि पिता के शक ने उसके जीवन को नर्क बना दिया था।

मंसाराम के चरित्र का विश्लेषण इस प्रकार किया जा सकता है :-

- (1) मेधावी : मंसाराम बुद्धिमान और परिश्रमी है। वह एक होनहार युवक है जो खेलकूद और पढ़ाई में समान रूप से योग्य है। पिता तोताराम द्वारा रूष्ट होकर अनेक प्रकार से प्रश्न किए जाते हैं पर वह शालीनता से सभी प्रश्नों के उत्तर देता है। तोताराम उसके उत्तरों में किसी प्रकार की कमी न पाकर विचलित हो उठते हैं और उस पर व्यर्थ ही समय बर्बाद करने का आरोप लगाते हैं। परन्तु वह निर्भीकता से अपने पिता के आधारहीन आरोपों का खण्डन करता है।
- (2) आकर्षक व्यक्तित्व : मंसाराम आकर्षक व्यक्तित्व का धनी है। देखने में वह सुन्दर लगता है। उसके व्यक्तित्व की झलक को उपन्यासकार ने इस प्रकार दर्शाया है - “धूप में चलने के कारण मुख पर पसीने की बूँद आई हुई थीं, गोरे मुखड़े पर खून की लाली दौड़ रही थी, आँखों से ज्योति-सी निकलती मालूम होती थी।।”
- (3) स्वाभिमानी : मंसाराम एक स्वाभिमानी बालक था। वह अपने आत्मसम्मान की रक्षा के लिए बोर्डिंग हाउस चला जाता है। अपने आत्मसम्मान की रक्षा के लिए कहा गया उसका कथन देखने योग्य है - “जब स्नेह ही नहीं रहा, तो केवल पेट भरने के लिए यहाँ पड़े रहना बेहयाई है, अब वह मेरा घर नहीं है। इसी घर में पैदा हुआ हूँ, यहीं खेला हूँ, पर यह अब मेरा नहीं है।” यहाँ तक कि निर्मला द्वारा भेजी गई मिठाई भी वह स्वीकार नहीं करता और उसे वापस भिजवा देता है।
- (4) अडिग : मंसाराम एक ऐसा युवक है एक बार जो मन में सोच लेता है उसे पूरा करके मानता है। उसने बोर्डिंग हाउस में रहना चाहा तो हैडमास्टर को भी जगह न होते हुए दाखिला देना पड़ा। रुक्मिणी उसे बचपन से जानती है। जब निर्मला रुक्मिणी से मंसाराम को बोर्डिंग हाउस जाने से रोकने के लिए कहती है तो वह निर्मला से कहती है - “उसको तुम जानती नहीं हो। यह समझ लो कि वह स्कूल नहीं जा रहा है, वनवास ले रहा है, लौटकर फिर नहीं आयेगा। यह उन लड़कों में से नहीं, जो खेल में मार भूल जाते हैं। बात उसके दिल पर पत्थर की लकीर हो जाती है।”
- (5) चारित्रिक दृढ़ता : मंसाराम चरित्रवान युवक है। यद्यपि वह निर्मला का समवयस्क है, लेकिन वह निर्मला को अपनी माँ के समान ही आदर देता है। जब उसे यह पता चलता है कि उसके पिता उसके और निर्मला के सम्बन्धों को लेकर सन्देह करने लगे हैं तो उसे बहुत दुःख होता है। वह अपने प्राण देकर भी इस कलंक को मिटा देना चाहता है। जब अस्पताल में बीमार पड़ा है तो निर्मला के वहाँ आने पर वह मुंशी जी के सामने ही कहता है - “एक सती पर सन्देह किया जा रहा है, और मेरे कारण। मुझे अपने प्राणों से उसकी

रक्षा करनी होगी, यही मेरा कर्तव्य है। इसी में सच्ची वीरता है। माता, मैं अपने रक्त से इस कालिमा को धो दूंगा। इसी में मेरा और तुम्हारा दोनों का कल्याण है।”

(6) निर्भीक : उपन्यास में मंसाराम एक निर्भीक युवक के रूप में वर्णित है। घर में अचानक साँप निकल आने से अफ़रातफ़री मच जाती है परन्तु मंसाराम अत्यन्त सहजता से हॉकी के डण्डे से साँप को मारकर घर से बाहर फेंक देता है। इस पूरे प्रकरण में मंसाराम किसी भी प्रकार की उत्तेजना, घबराहट अथवा शेखी प्रदर्शित नहीं करता। निर्मला को पढ़ाने पर रूष्ट पिता जब मंसाराम से अनेक प्रकार के प्रश्न करते हैं तब भी मंसाराम बिना घबराहट के उनके उत्तर देता है। मुंशी जी द्वारा दिन भर आवारागर्दी का आरोप लगाये जाने पर वह निर्भीकतापूर्वक उनसे कहता है - “मैं शाम को एक घण्टा खेलने के लिए जाने के सिवाय दिनभर कहीं नहीं जाता।.... अगर कोई मेरे सामने आकर कह दे कि मैंने इन्हें कहीं घूमते देखा है तो मुँह न दिखाऊँ।”

निष्कर्ष : मंसाराम एक ऐसा युवक है, जो अपने आदर्शों के लिए अपने प्राणों का भी बलिदान कर देता है मंसाराम के माध्यम से लेखक ने एक आदर्शवादी, स्वाभिमानी, सच्चरित्र, बुद्धिमान, निर्भीक, होनहार और दृढ़ निश्चयी युवक का चित्रण किया है जो अन्त में अपने उज्ज्वल चरित्र की झलक दिखाकर इस लोक से विदा ले लेता है। मंसाराम का चरित्र आदर्श है। आज की पीढ़ी को उससे प्रेरणा ग्रहण करनी चाहिए।

### Question 9

“गाँव में फ़ैले अंधविश्वास के कारण ही सुधा को अपने बेटे से हाथ धोना पड़ा।” किस प्रकार ? [12<sup>1/2</sup>]  
सम्पूर्ण घटना का विस्तृत वर्णन कीजिये।

### i j k l d e h f v i f. k k

कुछ परीक्षार्थियों ने अंधविश्वास वाली बात लिखी पर विस्तार से महँगू के तीलियों वाले खेल तथा मौलवी द्वारा कान में फूँक डलवाने वाली घटना नहीं लिखी। बच्चे को नजर लगने वाली बात भी बहुत कम परीक्षार्थियों ने लिखी।

कुछ परीक्षार्थियों ने डॉक्टरी इलाज न करवाने के कारण सोहन की मृत्यु हुई, इस बात पर ज्यादा और अंधविश्वास पर कम चर्चा की।

### अध्यापकों के लिए सुझाव

- यहाँ महत्त्वपूर्ण बातें सरकंडे का खेल, नजर लगाना, झाड़ू-फूँक, मौलवी द्वारा फूँक डलवाने वाली घटना है, इस विषय में परीक्षार्थियों को जानकारी दी जानी चाहिए।
- डॉक्टरी इलाज के बिना अंधविश्वास की बलिवेदी पर एक डॉक्टर का बेटा चढ़ा, यह चर्चा भी आवश्यक है अतः इस पर भी उपयुक्त प्रकाश डाला जाना चाहिए।

## MARKING SCHEME

### Question 9

उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद द्वारा लिखित 'निर्मला' एक सामाजिक उपन्यास है। उनका नाम हिन्दी साहित्य के मूर्धन्य साहित्यकारों में लिया जाता है। निर्मला एक स्त्री प्रधान उपन्यास है। इस उपन्यास में अन्धविश्वास जैसी सामाजिक बुराई को भी उजागर किया गया है। समाज में अन्धविश्वास बुरी तरह जड़े जमा चुका है। इसका प्रमुख कारण है शिक्षा का अभाव। अशिक्षा के कारण हर व्यक्ति वर्षों से चली आई प्रथा को अथवा बातों को सच समझकर उन पर विश्वास करने लगता है। कई बार तो शिक्षित व्यक्ति भी इस चक्कर में पड़ जाते हैं और अपना अहित कर लेते हैं क्योंकि वे उसके तथ्य को नहीं जानते, उसका अंधानुकरण करते हैं। समाज में

चली आई रूढ़ियों का विरोध नहीं करते। पढ़े-लिखे होने पर भी उस पर चिन्तन-मनन नहीं करते तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण से उस पर विचार नहीं करते क्योंकि वे समाज में धर्मपुरुषों का विरोध नहीं करना चाहते हैं।

निर्मला अपनी बहन कृष्णा के विवाह में आई थी। बड़े धूमधाम से कृष्णा का विवाह सम्पन्न हो गया। सभी नाते-रिश्तेदार जा चुके थे, रह गई थी निर्मला। वकील साहब के बार-बार लिखने पर भी उनका मन वहाँ जाने को नहीं कर रहा था। सुधा ने जब निर्मला को बताया कि जियाराम अपने पिता को अपमानित करता रहता है तब निर्मला को चिन्ता हो गई। रात को वह सुधा के पास ही सोई थी पर नींद का नाम न था, उसे अपनी नवजात बेटी की चिन्ता होने लगी। दोनों बातें कर रहीं थी कि इसी बीच सुधा का बेटा सोहन भी जाग गया। सुधा ने बच्चे को छुआ तो लगा कि उसकी देह गरम है। उसने निर्मला से कहा, निर्मला ने माथा छूकर कहा कि इसे तो ज्वर आ गया है।

सुधा बोली - “जब सोया था, तो देह ठण्डी थी। शायद सर्दी लग गई, उढ़ाकर सुलाए देती हूँ। सवेरे तक ठीक हो जाएगा।”

सवेरा हुआ, लेकिन सोहन की दशा और भी अधिक खराब हो गई। उसकी नाक बहने लगी और बुखार और भी तेज़ हो गया। आँखें चढ़ गई और सिर झुक गया, अब उसका हँसना-खेलना, बोलना सब बन्द हो गया। सुधा घबरा गई। उसने निर्मला से डाक्टर को बुलाने की राय ली, लेकिन उसकी बूढ़ी माता ने कहा - “डाक्टर हकीम का यहाँ कुछ काम नहीं। साफ तो देख रही हूँ कि बच्चे को नज़र लग गई है। भला डाक्टर आकर क्या करेंगे ?”

सुधा को नज़र-वज़र पर विश्वास न था पर अम्मा के कथन का अनुमोदन बुढ़िया महरी और पड़ोस की पण्डिताइन ने भी किया। मँहगू आकर बोला - “मालकिन, यह दीठ है और कुछ नहीं, जरा पतली - पतली तीलियाँ मंगवा दीजिये। भगवान ने चाहा तो संझा तक बच्चा हँसने लगेगा।”

सरकण्डे के पाँच टुकड़े मँगवाए गए। मँहगू ने अपनी करामात दिखानी शुरू कर दी और यह कहकर चला गया कि शाम तक ठीक हो जाएगा। मैं शाम को फिर आऊँगा। शाम को फिर उसने नज़र उतारी। लेकिन सोहन की सारी रात खँसते-खँसते गुजरी। अब वृद्धा माताजी ने सोचा कि मँहगू नज़र न उतार सका अतः मौलवी से फूंक डलवा लाई, शाम को भी मौलवी ने फूंक छोड़ी पर सोहन तो सिर भी उठा न पाया। रात हो गई, सुधा ने मन ही मन निश्चय किया कि सुबह होते ही पति को तार कर देगी, लेकिन रात कुशल से नहीं बीत पाई। आधी रात को ही बच्चा हाथ से निकल गया। सुधा की सम्पत्ति उसकी बेवकूफी से समाप्त हो गई।

एक शिक्षित स्त्री होने पर भी वह गाँव में फैले अंधविश्वास की चपेट में आ गई और बेटे से हाथ धो बैठी। रात को डा. सिन्हा को तार दे दिया गया और दूसरे दिन वे 9 बजे तक आ पहुँचे। डा. सिन्हा कई बार भीतर गये पर सुधा उनके पास न गई। उसको अपनी नादानी पर पछतावा हो रहा था, वह भी फूट-फूट कर रोने लगी और सोचने लगी कि उनके सामने कैसे जाये ? क्या मुँह दिखाये ? उसने अपनी नादानी से उनके जीवन का रत्न छीनकर दरिया में डाल दिया।

सुधा की हालत बहुत दयनीय थी, उसे लगा कि वह आज किसे पति के पास लेकर जायेगी ? उसकी सूनी गोद देखकर कहीं वे चिल्ला न पड़े। उसे पति के सम्मुख जाने की अपेक्षा मर जाना उचित जान पड़ता था।

वह निर्मला से बोली - “मेरा कलेजा तो अभी से उमड़ा जाता है। मैं इतना वज़्रपात होने पर भी बैठी हूँ, मुझे यही आश्चर्य हो रहा है।....”

अंत में सुधा दबे पाँव अपने पति के पास पहुँच और उनके वक्षस्थल से लिपट कर रोने लगी। पति ने उसे सांत्वना दी। वह बोली - “मैं नज़र के धोखे में थी।....” पति के प्रेमपूर्ण वचनों ने उसे सहारा दिया और उसके हृदय के बोझ को हल्का कर दिया।

इस प्रकार हम देखते हैं कि गाँव में अशिक्षा के कारण अंधविश्वास फैला हुआ है, पढ़े-लिखे लोग भी उनके चक्कर में पड़कर अपना नुकसान कर बैठते हैं।

सुधा एक शिक्षित स्त्री थी लेकिन एक शिक्षित महिला भी गाँव में फैले अंधविश्वास की चपेट में आ गई और बेटे से हाथ धो बैठी। इस प्रकार अंधविश्वास के कारण सुधा अपना नुकसान कर बैठी।

## दफ़्तर्-ल ग़फ़्तर्

### Question 10

‘मधुआ’ कहानी में शराबी ठाकुर के पास क्यों जाता था ? मधुआ शराबी को कहाँ मिला ? मधुआ के दायित्व ने शराबी के जीवन को किस प्रकार बदल दिया ? [12<sup>1/2</sup>]

### ijhkdldh fVli f. k k

कुछ परीक्षार्थियों ने शराबी एवं मधुआ की कहानी अच्छे से लिखी पर शराबी के जीवन में मधुआ के आने से क्या परिवर्तन आया, वह नहीं लिखा। शराबी ने मधुआ का दायित्व लेते हुए क्या करना शुरू किया, इस पर भी कुछ परीक्षार्थियों ने चर्चा नहीं की।

### अध्यापकों के लिए सुझाव

- सभी बिन्दु परीक्षार्थियों द्वारा पढ़ी जाएँ व उनके अनुसार उत्तर लिखने का अभ्यास प्रतिदिन की कक्षा में कराया जाए।
- शुद्ध भाषा लेखन पर जोर दिया जाए।

## MARKING SCHEME

### Question 10

मधुआ कहानी में शराबी ठाकुर के पास इस लिए जाता है क्योंकि ठाकुर को अपना मनोरंजन करने के लिए कहानी सुनने का शौक था। शराबी को ऐसी मनोरंजक कहानियाँ आती थीं। शराबी को शराब की लत थी, उसे पूरा करने के लिए पैसे चाहिए। ठाकुर को मनोरंजक कहानी सुनाकर वह उनसे कुछ रुपये एंठ लेता था।

शराबी ठाकुर को कहानी सुनाकर चलने लगा तो ठाकुर ने उसे एक रुपया दिया और कहा कि लल्लू को हमारे पास भेज देना। लल्लू ठाकुर का जमादार था। शराबी लल्लू को खोजते हुए पहुँचा तो फाटक वाली कोठरी के पास एक बालक के रोने की आवाज सुनाई पड़ी। लल्लू जमादार उसे कठोर स्वर में डाँट रहा था। शराबी को बालक की भोली-भाली और दयनीय दशा देख कर दया आ गयी। वह उसे अपने साथ ले आया।

शराबी अकर्मण्य था। वह दिन-रात शराब के नशे में डूबा रहता था। मधुआ का दायित्व मिलते ही उसकी दिनचर्या बदल गयी। ठाकुर से जो रुपया मिला था उसकी शराब नहीं खरीदी अपितु स्वयं के लिए और मधुआ के खाने के लिए सामान लाया। उसे अनिकेत और निराश्रित जान कर अपना और उसका जीवन निर्वाह करने के लिए कुछ उद्यम करने का निश्चय किया क्योंकि संयोग वश उसके मित्र रामजी ने शान रखनेवाली कल उसे लौटा दी। जब कुछ करने की चाह होती है तो राह निकल ही आती है यही शराबी के साथ हुआ। इस प्रकार शराबी का जीवन बदल गया। इस पर उपयुक्त एवं विस्तृत प्रकाश डालना।

## Question 11

‘लक्ष्मी का वाहन’ कहानी में लेखक ने किस प्राचीन मिथक के टूटने की बात कही है, और क्यों ? [12<sup>1/2</sup>]  
अपने शब्दों में कहानी के आधार पर उत्तर दें।

### ijhkdldh fVli f. k k

‘लक्ष्मी का वाहन’ में प्राचीन मिथक के बारे में नहीं बताया गया। बहुत कम छात्रों ने इस को स्पष्ट किया। अधिकांश छात्रों ने केवल कथा का सार लिखा।

#### अध्यापकों के लिए सुझाव

- प्राचीन मिथक के टूटने एवं नये मिथक को कहानी से सम्बद्ध करके लिखना चाहिए - प्रश्न के अनुरूप उत्तर लिखने के लिए प्रेरित करना चाहिए।
- कहानी से सन्दर्भ स्पष्ट करते हुए ही इस प्रश्न का उत्तर लिखा जाना चाहिए - इस विषय पर परीक्षार्थियों को जानकारी दी जानी चाहिए कि उत्तर किस तरह लिखा जाए।

## MARKING SCHEME

### Question 11

‘लक्ष्मी का वाहन’ कहानी प्राचीन भारतीय मिथक के सामने एक नया और आधुनिक मिथक रखती है। परम्परागत भारतीय मान्यता के अनुसार लक्ष्मी का वाहन उल्लू है और लक्ष्मी जिसको धन देती है, उल्लू उसके सिर पर जाकर बैठ जाता है। लेखकीय मिथक के अनुसार लक्ष्मी जिसको धन देती है उसको उल्लू नहीं चाँदी का जूता देती है।

यह कहानी युगीन राजनीतिक-सामाजिक जीवन के भ्रष्टाचार को उजागर करके पूँजी के दुरुपयोग का पर्दाफाश करना चाहती है।

कहानी में फकीरचंद शोषक वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाला सेठ है। वह एक कारखाने का मालिक है और बहुत धनवान है। कारखाने में काम करने वाले मजदूर शोषित वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। सेठ फकीरचंद कुछ मजदूरों की छँटनी कर देता है -

“एक एक को निकाल दूँगा। तुम समझते हो मुझे कारीगर और मजदूर नहीं मिलेंगे ?”

इतना ही नहीं, वह बोनस देने से भी इंकार कर देता है। इस पर अन्याय का मुकाबला करने के लिये मजदूर संगठित होकर अपने अधिकारों के लिए लड़ते हैं। सेठ फकीरचंद के समझाने और डराने-धमकाने का उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता, वे कारखाने में काम करना बंद कर देते हैं, हड़ताल करते हैं।

सेठ फकीरचन्द भी मजदूरों के आगे नहीं झुकता और कारखाने में ताला लगवाकर काम बंद कर देता है। मजदूर भी संघर्ष के लिए कमर कस लेते हैं और ताला तोड़कर काम करना शुरू कर देते हैं।

तत्पश्चात सेठ फकीरचंद धन के बल पर पुलिस को अपने पक्ष में कर लेता है। सेठ फकीरचंद कोतवाल को पैसे देकर गरीब मजदूरों पर गोली चलवा देता है। इस प्रकार मजदूरों की एकता व संगठन शक्ति को तोड़-फोड़ और मजदूरों की कारखाने पर कब्जा करने की कोशिश घोषित करवा देता है।

मुनीम जी कहते हैं - “पुलिस ने सब कुछ ठीक करवा दिया है। ताला लग गया है। अब कोई खतरा नहीं है। कारखाना बच गया।”

अन्त में पुलिस मजदूरों को पकड़ लेती है और कारखाने पर फिर से सेठ फकीरचंद का कब्जा हो जाता है। इस प्रकार कहानी में शोषक और शोषित वर्ग के संघर्ष में 'चाँदी के जूते' की ताकत से शोषित वर्ग की विजयी होते हुए दिखाया गया है।

## Question 12

'धरती अब भी घूम रही है' कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए, तथा शीर्षक की सार्थकता पर प्रकाश डालिये। [12<sup>1/2</sup>]

### ijklkl dh fVli f. k k

कुछ परीक्षार्थियों ने केवल कहानी का उद्देश्य तथा कहानी लिखी। कुछ ने सिर्फ कहानी लिखी। कुछ परीक्षार्थियों ने शीर्षक की सार्थकता और उद्देश्य पर चर्चा की, कहानी के मुख्य बिन्दुओं से जोड़कर प्रश्न का उत्तर नहीं लिखा। कुछ ने शीर्षक की सार्थकता को सिद्ध नहीं किया।

### अध्यापकों के लिए सुझाव

- कहानी का उद्देश्य, शीर्षक की सार्थकता तथा कहानी के मुख्य बिन्दुओं के साथ चर्चा करते हुए इस विषय को स्पष्ट किया जाना चाहिए।
- सिर्फ कहानी का सार लिख देना ही काफी नहीं है। सभी बिन्दुओं पर चर्चा होनी चाहिए।

## MARKING SCHEME

### Question 12

'धरती अब भी घूम रही है' एक ऐसी कहानी है जिसका उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि समाज में भ्रष्टाचार पूरी तरह से व्याप्त हो चुका है जिसने मानव मन को विषाक्त और दुष्ट प्रवृत्ति वाला बना दिया है। उसका दुष्प्रभाव बच्चों के कोमल मस्तिष्क पर पड़ता जिसके कारण नीना और कमल न्यायालय पहुँच कर जज साहब के चैम्बर में पहुँच गये। वहाँ भी भ्रष्टाचार की ही चर्चा थी। उनके व्यक्तिगत प्रभाव का लाभ बच्चों को नौकरी पाने में मिला। बच्चों ने (नीना और कमल ने) जज के सामने वही बातें कह दी जो उन्होंने अपने घूसखोर मौसा के मुख से सुनी थी। उन्होंने जज साहब से अपने पिता को जेल से छोड़ने के लिए प्रार्थना की और घूस देने के लिए पचास रु. लाये थे। रुपये कम होने की दशा में नीना रुकने के लिए भी तैयार थी क्योंकि उसे पता चला था कि सुन्दरता भी घूस का काम करती है। धरती के अब भी अनवरत घूमने से प्राकृतिक व्यापारों में बदलाव नहीं आया है किन्तु मानव समाज को भ्रष्टाचार ने पतित कर दिया है। मनुष्य में नैतिक और जीवन मूल्यों का क्षरण हो गया है नीना और कमल के साथ उसके मौसा और मौसी का अत्याचार इसका ज्वलन्त उदाहरण और प्रमाण है।

कहानी का शीर्षक छोटा, कौतूहल वर्धक और कहानी की समस्त घटनाओं का केन्द्र बिन्दु है और कथानक का मूल बिन्दु भी सूत्र रूप में इसमें छिपा है। कहानी का प्रारम्भ कौतूहलपूर्ण है। माता के स्नेह से वंचित नीना और कमल के पिता को 20 रु. की घूस लेने के जुर्म में जेल हो गयी। बच्चों की मौसी ने समाज के सामने अपना ममत्व दिखाने के लिए नाटक किया। उन्हें माता-पिता का स्नेह देने का वादा करके अपने घर ले गयी परन्तु वहाँ उनके साथ ममतापूर्ण आचरण करना तो दूर उनका तिरस्कार करना शुरू कर दिया। उनपर अत्याचार करने लगी, ताने मार-मार कर उन्हें इतना दुखी कर दिया कि वे अपने पिता का स्नेह पाने के लिए व्याकुल होकर उन्हें जेल से छोड़ने के लिए लेन-देन का सुना हुआ सूत्र अपनाकर जज साहब के सामने जाकर यथार्थ

बयान किया। जज साहब घूस लेकर डाकू और हत्यारे को छोड़ देते हैं। पिता ने 20 रु. घूस लेने की गलती की है।

लेखक बच्चों के मुह से अकथनीय बातें सुनकर चकित रह गया। उसने सोचा धरती ने घूमना बन्द कर दिया है। परन्तु उसका यह सोचना ठीक नहीं था उसने स्वयं ही अनुभव किया। इस प्रकार कहानी के आदि, मध्य और अन्त में धरती घूमने के प्राकृतिक यथार्थ पर प्रकाश डाला है अतः शीर्षक कहानी कला के अनुरूप और सार्थक है।

## Tokyleq kh ds Qw

### Question 13

महामात्य शकटार को परिवार सहित कारावास में किसने और क्यों डाल दिया ? इस समाचार को [12<sup>1/2</sup>] सुनकर मंत्रिपरिषद् के सदस्यों की क्या प्रतिक्रिया हुई ? आमात्य राक्षस ने उन्हें किस प्रकार से समझाया और क्या सुझाव दिया ? संक्षेप में समझाइए।

### ijhkdldh fVli f. k k

इस प्रश्न के उत्तर में ज्यादातर परीक्षार्थियों ने शकटार को जेल में किसने और क्यों डाला, इसकी चर्चा की, किन्तु मंत्रिपरिषद् के सदस्यों की प्रतिक्रिया बहुत विस्तृत रूप से नहीं की, जैसे : नगर सेठ, आमात्य, कल्पक आदि के कथन की अलग-अलग चर्चा न कर उसे एक या दो वाक्यों में समेट दिया। कुछ परीक्षार्थियों ने आमात्य राक्षस द्वारा मंत्रिपरिषद् के सदस्यों को समझाना आदि भी शामिल नहीं किया। कुछ छात्रों ने अन्त में चाणक्य के अपमान की चर्चा भी कर दी।

### अध्यापकों के लिए सुझाव

- उपन्यास पढ़ते समय हर घटना का विस्तृत वर्णन समझाया जाना चाहिए और किस प्रकार उत्तर लिखना है, यह बताना चाहिए।

## MARKING SCHEME

### Question 13

श्री सुशील कुमार द्वारा रचित "ज्वालामुखी के फूल" उपन्यास एक ऐतिहासिक उपन्यास है, जिसमें उपन्यासकार ने अनेक ऐतिहासिक घटनाओं का तानाबाना बुना है। यह उपन्यास भारतीय इतिहास के प्रथम व्यापक साम्राज्य में होने वाली राजनैतिक घटनाक्रमों पर आधारित है।

आर्य शकटार और आर्य राक्षस के अथक प्रयास से मगध का विशाल साम्राज्य स्थापित हुआ। साम्राज्य पर सम्राट महापद्मनन्द का अधिकार था। प्रचण्ड शक्ति, अपार धन ने मगध सम्राट नन्द को दम्भी, निरंकुश, विलासी, लोभी, अविवेकी बना दिया। उसने अकारण ही दूरदर्शी गम्भीर मगध देश तथा उसकी प्रजा का हित चाहने वाले, समय की गति जानने वाले, कर्तव्यपरायण, सहनशील, तीक्ष्ण दृष्टि रखने वाले तथा निर्लोभी महामात्य शकटार को पूरे परिवार सहित कारावास में डाल दिया। इस समाचार को सुनकर मंत्रिपरिषद् के सदस्यों में हलचल मच गई। मंत्रिपरिषद् के कई सदस्य मूर्खों की तरह रथों और घोड़ों पर बैठकर इधर-उधर भागदौड़ करने लगे। वे सभी इस घोर अत्याचार का विरोध प्रदर्शित करने के लिए अमात्य राक्षस के भवन पहुँच गये।

कक्ष के भीतर अमात्य राक्षस के साथ अमात्य कल्पक, दुरन्त, नागसेन आदि कितने ही राजपुरुष तथा जाने माने नागरिक बैठकर गम्भीरता से विचार-विमर्श करने लगे।

अमात्य कल्पक की दृष्टि में यह कृत्य घोर अत्याचार है। आर्य शकटार जैसे महान व्यक्ति को कारावास में डालने का अर्थ यह है कि सम्राट की दृष्टि में योग्य से योग्य व्यक्ति का भी कोई मूल्य नहीं है।

नगर सेठ सुदत्त इसे अत्याचार की पराकाष्ठा मान रहे हैं। अमात्य दुरन्त को अन्देशा है कि यदि तुरन्त निर्णय न लिया गया तो किसी भी क्षण विद्रोह हो सकता है। भयानक रक्तपात होगा।

अमात्य कल्पक ने चेतावनी सी देते हुए कहा कि कोई आश्चर्य नहीं कि राजभवन को घेर कर खड़े विद्रोही किसी भी क्षण सैनिकों पर टूट पड़ें।

अमात्य राक्षस एक शब्द भी नहीं बोले। वह दीवार की ओर अपलक ताकते रहे, मानों उस पर अंकित भविष्य का कोई लेख पढ़ रहे हों।

सबकी आँखें उन्हीं पर लगी हुई थीं पर वह निश्चल बैठे थे।

अमात्य कल्पक ने विनम्र स्वर में कहा कि आर्य शकटार के बाद आप ही हम सब में ज्येष्ठ हैं। इस काण्ड के बाद सम्राट ने भी आपको ही महामात्य नियुक्त किया है। कोई उपाय कीजिये आर्य ! नहीं तो विनाश होकर रहेगा। अमात्य दुरन्त ने सम्राट को महापद और उग्रसेन बनाने में आर्य शकटार और आर्य राक्षस के प्रयत्नों की चर्चा की। उन्होंने आज इस तरह आर्य शकटार को अपमानित होता देख रोषावेश में आकर उनकी (राजा नन्द की) जाति और किस तरह से छल से कालाषोक की हत्या करके वह मगध की गद्दी पर बैठे, उसका खुलासा कर दिया। यह रहस्य वैसे तो सभी जानते थे, किन्तु आज तक इस प्रकार प्रकट रूप से इस बात को कहने का साहस किसी को नहीं हुआ था। सुनकर सारी सभा में सन्नाटा छा गया।

मंत्रिपरिषद के सदस्यों का रोष देखकर अमात्य राक्षस ने उन्हें समझाया कि विनाश की घोषणा तो बहुत सरल होती है पर इसका अर्थ उससे पूछा जिसने निर्माण किया है।

मुझसे पूछा, सन्तोष न हो तो बन्दीगृह में जाकर आर्य शकटार से पूछो ! मुझे विश्वास है कि वह भी यही कहेंगे कि किसी एक व्यक्ति का अपराध या किसी एक व्यक्ति का अपमान इतना बड़ा नहीं है कि उसका फल सारी प्रजा भुगते।

आर्य राक्षस पर जब सत्ता लोभ का आरोप लगाया गया तो उन्होंने स्पष्ट किया कि लोभ है, पर सत्ता का नहीं, लोभ रक्षा का है। मेरे रहते प्रजा में खून-खराबा नहीं होगा।

उन्होंने यह भी समझाया कि सम्राट बिना अपनी शक्ति को परखे कोई भी काम नहीं करते। प्रजा यदि विरोध करेगी तो सम्राट की विशाल सेना इस विद्रोह को क्षण भर में कुचल देगी।

आर्य राक्षस ने सभी से निवेदन किया कि वे समय का साथ दें। कहीं ऐसा न हो कि अपने क्रोध की आग में हम स्वयं ही जल मरें। हम यदि यहाँ हैं तो प्रजा के हित के लिए हैं हानि के लिए नहीं।

बड़ी देर तक चुप्पी छाई रही। फिर फुस्फुसाहट होने लगी। अन्त में महामात्य राक्षस ने पूछा कि आप लोगों ने निर्णय कर लिया होगा ?

मंत्रिपरिषद ने एक स्वर से कहा कि महामात्य राक्षस पर हमें विश्वास है।

महामात्य राक्षस ने सुझाव दिया कि इसी क्षण हर नगर, हर गाँव में घोषणा कर दी जाय कि सम्राट महापद्मनन्द ने जो कुछ भी किया है वह प्रजा के हित के लिए किया है। इसके विरुद्ध बोलने वाला राजद्रोही होगा और उसे कठोर से कठोर दण्ड दिया जायेगा।

## Question 14

“सम्राट महापद्म नन्द जितना वीर और कुशल योद्धा था, सम्राट सर्वार्थसिद्धि उतना ही कायर।” इस [12<sup>1/2</sup>] उक्ति के आधार पर दोनों के चरित्र की तुलना कीजिए।

ijhkdldh fVli f. k k

रीक्षार्थियों ने यद्यपि 'सम्राट महापद्म नन्द' तथा 'सम्राट सर्वार्थसिद्धि' के चरित्र की तुलनात्मक समीक्षा अलग-अलग बिन्दुओं में न कर, घटनाओं के द्वारा दोनों का चरित्रांकन किया है तथापि दोनों के चरित्र की विशेषताओं को घटनाओं द्वारा समाहित किया। अतः तुलनात्मक दृष्टि से इस प्रश्न के उत्तर में ज्यादा खामियाँ नहीं थीं।

अध्यापकों के लिए सुझाव

- यदि परीक्षार्थियों को समझाया जाए कि दोनों व्यक्तियों के चरित्र चित्रण में अलग-अलग चारित्रिक गुण लिखकर उसे अन्त में समीक्षा के रूप में तुलनात्मक रूप से प्रस्तुत किया जाए, तो उत्तर ज्यादा प्रभावी होगा।
- प्रश्न की भाषा को ध्यान से पढ़कर उसका उत्तर देने के लिए छात्रों को प्रोत्साहित करना चाहिए।
- घटना का वर्णन (कब सर्वार्थसिद्धि को सम्राट बनाया गया) आवश्यक नहीं है।

## MARKING SCHEME

### Question 14

महापद्म नन्द मगध के महाप्रतापी सम्राट हैं। मगध के इस विशाल साम्राज्य को आर्य शकटार एवं महामात्य राक्षस ने अपने अथक प्रयासों से खड़ा किया था। महापद्म नन्द ने अपने बाहुबल, पराक्रम तथा ऐश्वर्य से मगध को एक प्रभुतासम्पन्न राज्य बना दिया था। नन्द जहाँ एक ओर अत्यन्त पराक्रमी, साहसी एवं बल वैभव के धनी है, वहीं दूसरी ओर अविवेकी, अदूरदर्शी, दम्भी, सनकी तथा विलासी भी हैं। अपने इन्हीं अवगुणों के कारण उन्होंने अनेक ऐसे कार्य कर डाले जिससे कि उनका पराभव होता है तथा अन्त में उनकी हत्या कर दी जाती है।

उनकी चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं -

- (1) वीर एवं साहसी कृ सम्राट नन्द अत्यन्त साहसी एवं पराक्रमी हैं। अपने अपार बल एवं साहस का परिचय देते हुए उन्होंने मगध की सीमाओं का सुदूर देशों तक विस्तार किया। भगवान परशुराम के समान धरती को क्षत्रियों से विहीन कर डाला।
- (2) दुस्साहसी कृ सम्राट नन्द कभी-कभी ऐसे अद्भुत कार्य कर जाते जो उनके दुस्साहसी होने का परिचय देते हैं। उन्हें जीवित सिंहों के शिकार करने का अनोखा शौक था। एक बार वन में शिकार करते हुए वह अपने अंगरक्षकों को कहीं पीछे छोड़ कर वन में दूर तक निकल गए। जब लौटे तो सत्ताइस जीवित सिंह पकड़कर लाए थे।
- (3) सौन्दर्य के उपासक - नन्द को सुन्दरता से अपार मोह था। वह चाहते थे कि धरती का कण-कण सुन्दरता से खिल उठे। लेखक के शब्दों में -

शाला की मनमोहक सुन्दरता देखकर सम्राट ने मुस्कराकर रानी से कहा -

“मैं बहुत प्रसन्न हूँ देवि ! शाला की सज्जा करने वाले कलाकारों को पुरस्कार दिया जाये।”

- (4) अविवेकी - नन्द ने अनेक बार ऐसे निर्णय कर डाले जो उनके अविवेकी स्वभाव का परिचायक हैं। जैसे आर्य शकटार जैसे सुयोग्य महामात्य को अकारण कारावास में डाल देना, विचक्षणा को मृत्युदण्ड देने का निर्णय लेना, नायक मौर्य को पातालकारा में मरने के लिए छोड़ देना तथा भरी सभा में आमन्त्रित किए गए चाणक्य का अपमान करना उनके अविवेक का परिचायक है।

- (5) दम्भी - अपार बल-वैभव एवं विलासिता के कारण सम्राट् नन्द दम्भी हो गए थे। सत्ता के मद में चुर नन्द को बात-बात पर आर्य राक्षस का अपमान करने में भी हिचकिचाहट नहीं होती थी। दम्भ के चक्कर में उन्होंने अपने हितैषी आर्य राक्षस की हितकारी बातों पर कभी ध्यान नहीं दिया और विनाश को प्राप्त हुए।
- (6) अदूरदर्शी - अपने बल एवं ऐश्वर्य के कारण सम्राट् नन्द जैसे अन्धे हो गए थे। वह यह भी भूल जाते कि जो भी गलत काम वह कर रहे हैं उसका दूरगामी परिणाम क्या होगा। इसीलिए उनके शत्रुओं की संख्या बढ़ती गई तथा उनके विनाश का विषवृक्ष पल्लवित होता गया।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि अत्यन्त पराक्रमी, प्रतापी एवं उग्रसेन होते हुए भी नन्द अपने इस दम्भ एवं निरंकुशता के कारण विनाश को प्राप्त हो गए।

आर्य शकटार, विष्णुगुप्त चाणक्य तथा दासी विचक्षणा ने मिलकर नन्द के विनाश की योजना बनाई। उचित मौका देखकर विचक्षणा ने रात्रि भोजन में हलाहल विष मिला दिया। सम्राट् नन्द मेहमानों तथा उनके आठों पुत्र मौत की नींद सो गए।

स्वामिभक्त आर्य राक्षस ने मगध के सिंहासन पर नन्द के भाई सर्वार्थसिद्धि को बैठा दिया परन्तु वह एक कायर एवं अयोग्य राजा सिद्ध हुआ।

चाणक्य के शब्दों में -

“कठपुतला राजा नहीं बना करता ! बनते हैं योद्धा जिनमें शासन करने की शक्ति हो।”

सर्वार्थसिद्धि की चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं -

- (1) कायर - सर्वार्थसिद्धि स्वभाव से ही कायर एवं भीरु हैं, युद्ध के नाम से ही वह डर जाता है। चन्द्रगुप्त ने पर्वतक तथा अनेक शक्तिशाली राजपुत्रों के साथ मगध पर भयानक आक्रमण कर दिया था। परन्तु सर्वार्थसिद्धि इन सबसे बेखबर है। महामात्य राक्षस चिन्ता में पड़ जाते हैं। उन्हें सम्राट् नन्द की याद आ जाती है। वह सोचते हैं - आज सम्राट् नन्द होते तो इतना चिन्तित होने की आवश्यकता न पड़ती।
- (2) भोगी एवं विलासी कृ सर्वार्थसिद्धि एक विलासी राजा है। देश चारों ओर से संकट में घिरा है परन्तु वह चारों ओर से सुन्दरियों से घिरा बैठा है। स्वादिष्ट भोजन करते हुए दासियों के साथ आमोद-प्रमोद में डूबे हुए सर्वार्थसिद्धि को एक राजा के मान और सम्मान का कोई ध्यान नहीं।
- (3) नासमझ एवं मूर्ख - मगध का सम्राट् होने पर भी सर्वार्थसिद्धि में ज़रा भी समझदारी एवं बुद्धिमानी नहीं है। बात-बात पर खिलखिलाकर हँसना, दासियों को भी खुली छूट दे देना उसकी मूर्खता का प्रमाण है।  
हँसते हुए सम्राट् ने छोटी महारानी से पूछा, “तुम्हारे प्रदेश में मोर बहुत होते हैं। कभी मैं वहाँ चलाँगा।”  
“आप क्यों कष्ट करेंगे? इच्छा होते ही झुण्ड के झुण्ड मोर ही चलकर पाटलिपुत्र आ जाएँगे।” रानी ने उत्तर दिया।
- (4) कर्तव्य के प्रति उदासीन - एक राजा होते हुए भी राजा के प्रति अपने कर्तव्यों से उन्हें कोई लगाव नहीं है। आर्य राक्षस उन्हें समझाना चाहते हैं कि मगध को इस समय उनकी अत्यन्त आवश्यकता है परन्तु सर्वार्थसिद्धि जैसे उनकी कोई बात समझना ही नहीं चाहते। आर्य राक्षस के अनुरोध पर उनका जवाब कुछ इस प्रकार था -

.....मैं सम्राट् हूँ। सेना को मेरा आदेश दो, वह युद्ध करेगी। इसके लिए मैं क्यों जाऊँ .....

- (5) अयोग्य राजा कृ सर्वार्थसिद्धि में राजा के योग्य एक भी गुण नहीं है। अमात्य राक्षस ने उन्हें समझाने का हर संभव प्रयत्न किया कि वह सम्राट् नन्द के समान प्रजा का साथ दें। सेना के सामने आकर सैनिकों का उत्साहवर्धन करें परन्तु सर्वार्थसिद्धि जैसे कुछ समझना ही नहीं चाहते थे। उन्हें बस अपने सुख और आराम से मतलब था।

राक्षस ने सम्राट् से कहा कृ "सैनिकों का साहस बढ़ाने के लिए यदि महाप्रभु एक बार शिविरों में पहुँच जाँ तास.....\*\*

.....बार-बार उन्हें साहस बँधाने की बात क्यों ? उनके लिए क्या मेरा आदेश ही बहुत नहीं हैं ? युद्ध करने के लिए ही तो उन्हें धन मिलता है।" सम्राट् ने झल्लाते हुए उत्तर दिया।

राक्षस अकेले खड़े रहे। आँखों में आँसू भर आए। एक थे सम्राट् नन्द जो ऐसे अवसर पर मना करने पर भी सदैव आगे रहने की ज़िद करते थे। और आज राक्षस उन्हीं के भाई सर्वार्थसिद्धि से निवेदन कर रहा है, उन्हें उनकी ज़िम्मेदारी बता रहा है, पर वे अपने धर्म को निभाने से इन्कार कर रहे हैं।

उत्तरीय से आँखें पोछ कर राक्षस चुपचाप बाहर निकल पड़े।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि सम्राट् सर्वार्थसिद्धि केवल राजा हैं। राजा को मिलने वाले सारे सुख भर ही उन्हें प्रिय हैं। राजा के कर्तव्यों से उन्हें लगाव नहीं है।

महापद्म नन्द ने अपने बल एवं पराक्रम से मगध के जिस विशाल साम्राज्य को खड़ा किया था - सर्वार्थसिद्धि ने अपनी कायरता एवं मूर्खता के कारण शत्रुओं के हाथ में चले जाने दिया। अन्ततः शत्रुओं ने उनकी हत्या करवा दी। नन्द वंश का समूल नाश करवाने की चाणक्य की प्रतिज्ञा भी इसके साथ ही पूरी हो गयी।

## Question 15

"पाटलिपुत्र तो सुरक्षित है न आर्य राक्षस ? सम्राट् के इस प्रश्न से काँप कर राक्षस ने कठिन [12<sup>1/2</sup>] स्वर में उत्तर दिया, इस नगरी की रक्षा का भार तो अब देवताओं पर ही है सम्राट् !" पाटलिपुत्र को क्या खतरा है? राक्षस ने सम्राट् के प्रश्न का उत्तर इस प्रकार से क्यों दिया ? विस्तार से लिखिए।

### ijhkdldh fVli f. k k

इस प्रश्न का उत्तर बहुत कम परीक्षार्थियों ने लिखा। बहुत विस्तार से सम्राट् सर्वार्थसिद्धि और आमात्य राक्षस के बीच वार्त्तालाप को नहीं लिखा गया। राक्षस द्वारा बार-बार महाराज के पास जाने तथा उनसे युद्ध में चलने का आग्रह भी उद्घृत नहीं हुआ। केवल उनके भोगी एवं विलासी जीवन तथा राक्षस से पाटलिपुत्र के सुरक्षित होने का प्रश्न तथा प्रत्युत्तर में आमात्य राक्षस का जवाब लिखा है।

### अध्यापकों के लिए सुझाव

- इस प्रश्न के उत्तर में तीन बिन्दु मुख्य रूप से अपेक्षित हैं :
  - पाटलिपुत्र पर खतरा—किससे एवं क्यों ?
  - सम्राट् सर्वार्थसिद्धि का आमात्य राक्षस से प्रश्न करना।
  - सम्राट् सर्वार्थसिद्धि के रंग ढंग को देखकर आमात्य राक्षस का चिंतित होना तथा इस तरह का जवाब देना।
- इन तीनों बिन्दुओं का सिलसिलेवार ढंग से उल्लेख होना आवश्यक है। प्रश्न की इन बारीकियों पर परीक्षार्थियों के साथ चर्चा करना जरूरी है।

## MARKING SCHEME

### Question 15

सीमाप्रान्त के शक्तिशाली राजा पर्वतक के साथ-साथ सिन्धु, काश्मीर आदि पाँच राजाओं की सेना के साथ मौर्य चन्द्रगुप्त पंचनद प्रदेश के चुने हुए योद्धाओं की अपनी सेना के साथ मगध पर आक्रमण करने के लिए बढ़ रहा है। यदि इस विशाल वाहिनी को रोका न गया तो निश्चित ही सम्राट् सर्वार्थसिद्धि का पतन हो जाएगा। महामात्य राक्षस सम्राट् से सेना का नेतृत्व करने को कह रहे हैं पर वे खून-खराबा से दूर रहना चाहते हैं। इसीलिए मगध की राजधानी पाटलिपुत्र पर मौर्य चन्द्रगुप्त का अधिकार हो जाने का खतरा है। अर्थात् नन्द वंश का पतन हो जाने का खतरा है।

दमन से सूचना मिलते ही राक्षस चिन्तित हो जाते हैं। यदि आज सम्राट् नन्द होते तो उन्हें इतना चिन्तित होने की आवश्यकता न पड़ती। पर उनके सिंहासन पर बैठकर भी उन्हीं के भाई सम्राट् सर्वार्थसिद्धि मगध की रक्षा करने में असमर्थ हैं। फिर भी राक्षस ने सम्राट् के पास जाकर संकट की सूचना दी।

सुनते ही सम्राट् बौखला गए। जल्दी से बोले, तुम इसी समय मगध की सेना भेजकर शत्रु को पंचनद की सीमा में ही रोक दो, महामात्य।

राक्षस ने सम्राट् को समझाते हुए कहा कि ऐसा कैसे हो सकता है, महाप्रभु ! इतने भयानक आक्रमण से रक्षा करने के लिए वैसी ही तैयारी भी तो करनी होगी।

सम्राट् ने कहा, तो तैयारी करो। मैं क्या करूँ ? फिर तन्मय होकर सुन्दरियों से घिरे बैठे स्वादिष्ट भोजन करने लगे। महामात्य द्वारा सहसा युद्ध की बात छेड़ देना उन्हें अच्छा नहीं लगा। ऐसे संकट के समय में सम्राट् आमोद-प्रमोद में रानियों के साथ व्यस्त रहे।

महामात्य राक्षस पषोपेष में पड़ गया। एक ओर तो चन्द्रगुप्त की विषाल वाहिनी मगध पर आक्रमण करने के लिए तैयार बैठी है, दूसरी ओर उत्तरदायित्व को नकारते हुए सम्राट् भोग-विलास में व्यस्त हैं। राक्षस की इच्छा हुई कि उठकर चले जाएँ, फिर सोचा कोई उपाय तो करना ही पड़ेगा। जिस स्वामी की स्मृतियों से व्याकुल होकर राक्षस ने अन्तिम साँस तक उसके राज्य और कुल लक्ष्मी की रक्षा करने की प्रतिज्ञा की है, उसी के कारण यह सब भी चुपचाप सहना ही पड़ेगा।

राक्षस ने महादेवी से निवेदन किया कि मुझे सम्राट् से एकान्त में आवश्यक विचार-विमर्श करना है।

सम्राट् एकान्त में राक्षस से विचार-विमर्श करने से इन्कार कर देता है।

राक्षस के पुनः आग्रह करने पर महारानी वहाँ से चली जाती है तथा उनके पीछे-पीछे अन्य रानियाँ तथा दासियाँ भी चली जाती हैं। एकान्त मिलने पर महामात्य राक्षस ने सम्राट् से कहा — विकट स्थिति है महाप्रभु, ध्यान दें। उत्तर के कितने ही समर्थ और शक्तिशाली राजा अपने प्रचण्ड योद्धाओं के साथ मगध को आक्रान्त कर रहे हैं। उन सैनिकों को अपने-अपने स्वामी पर निछावर होने में जरा भी दुःख नहीं होगा। साथ ही वे मौर्य चन्द्रगुप्त को देवता मानकर उस पर भी अपार श्रद्धा रखते हैं।

हमारी सेना के लिए भी एक ऐसा ही व्यक्तित्व चाहिए, जिसकी ललकार पर हमारे योद्धा अपना तिल-तिल कटा दे।

सम्राट् ने क्रोध से कहा — तो ऐसा कुशल सेनापति खोज निकालना तुम्हारा काम है, महामात्य, मेरा तो नहीं।

राक्षस ने कहा, ऐसा व्यक्ति एक ही है, देव। आप स्वयं। आपको स्वयं मगध की सेना के साथ खड़ा होना पड़ेगा। आपकी ललकार सुनकर सेना का बल दुगुना हो जाएगा।

मैं ? सम्राट् के चेहरे का रंग फक् पड़ गया।

मगध की रक्षा करनी है तो यही होगा। मगध सबसे पहले आपका ही है, महाप्रभु !

किन्तु मैं सम्राट् होकर.....

इसीलिए तो, देव ! आप सम्राट् हैं, अतः मगध की रक्षा का भार आपके ऊपर है।

आर्य राक्षस की बात सुनकर सम्राट् सहसा खड़े हो गए, बोले, नहीं। मैं सम्राट् हूँ। सेना को मेरा आदेश दो, वहा युद्ध करेगी। इसके लिए मैं क्यों जाऊँ ? सिर झटककर सम्राट् कक्ष से उठकर चले गए।

महामात्य राक्षस ने समझ लिया कि सम्राट् नन्द के बाद अब मगध की रक्षा का भार स्वयं उन्हें ही सभालना है।

मगध की रक्षा के लिए राक्षस स्वयं भी सेनापति भद्रशाल के साथ मैदान में उतर पड़े।

महामात्य राक्षस ने अद्भुत व्यूह-रचना की। सोचने लगे कि यदि किसी प्रकार सम्राट् सेना के शिविर में आकर एक बार भी खड़े होते तो युद्ध का अर्थ ही बदल जाता। उन्होंने तय किया कि एक बार फिर सम्राट् के पास जाना ही होगा।

सम्राट् ने तुरन्त ही मिलने की अनुमति दे दी। राक्षस ने सेनापति की भाँति खड्ग माथे से छूआकर सम्राट् का अभिवादन किया। फिर राक्षस ने कहा, सेना मगध की रक्षा के लिए तैयार खड़ी है, सम्राट् ! जब तक एक भी सैनिक जीवित रहेगा, तब तक शत्रुओं के पाटलिपुत्र की सीमा में प्रवेश कर पाने का प्रश्न ही नहीं उठता। बस एक बार यदि महाप्रभु का दर्शन उन्हें मिल जाए।

सम्राट् ने अचानक बात काट कर पूछा, क्या युद्ध पाटलिपुत्र में ही होगा ?

राक्षस बोले, हाँ ! फिर बोले, सैनिकों का साहस बढ़ाने के लिए यदि महाप्रभु एक बार शिविरों में पहुँच जाएँ तो.....

क्यों ? हमारे सैनिक भी क्या चन्द्रगुप्त और पर्वतक की विशाल सेना से भयभीत हैं ?

राक्षस ने कहा, यहाँ कोई भी भयभीत नहीं है, देव ! सैनिकों के भयभीत होने की तो बात ही क्या !

सम्राट् झल्लाते हुए बोले, तब बार-बार उन्हें साहस बँधाने की बात क्यों ? उनके लिए क्या मेरा आदेश ही बहुत नहीं है ? युद्ध करने के लिए ही तो उन्हें धन मिलता है ?

राक्षस का मन ग्लानि से भर गया। वह उठ खड़े हुए। बोले, जैसे प्रभु की इच्छा। मैं चलता हूँ। देवता कल्याण करें।

सम्राट् ने अचानक विचलित स्वर में पूछा, पाटलिपुत्र तो सुरक्षित है न, आर्य राक्षस ?

सम्राट् के इस प्रश्न से काँपकर राक्षस ने उत्तर दिया, इस महानगरी की रक्षा का भार तो अब देवताओं पर ही है, सम्राट्।

सम्राट् सर्वार्थसिद्धि केवल राजा हैं। राजा को मिलने वाले सारे सुख भर ही उन्हें प्रिय हैं। राजा के कर्तव्यों से उनका कोई लगाव नहीं है। इसलिए राक्षस ने सम्राट् के प्रश्न का उत्तर इस प्रकार से दिया था।

(a)  $i \dot{z} u \& i = e a d k i l s f o " k i j h k f f l z k a d k s d f B u y x s \backslash$

- वाक्य शुद्धि।
- निर्मला उपन्यास के तीनों प्रश्न।
- 'कथा सुरभि' पुस्तक में अन्तिम प्रश्न 'धरती अब भी घूम रही है'।

(b)  $i \dot{z} u i = e a d k i l s f o " k i j h k f f l z k a d s f y , v L i " V j g s \backslash$

- निबन्ध में अपने नगर में आए भूकम्प का वर्णन करना था न कि किसी अन्य नगर में आए भूकम्प का - ये बात परीक्षार्थियों के लिए अस्पष्ट रही।
- कहानी में मौलिकता शब्द भी छात्र समझ नहीं पाए और कुछ ने पढ़ी हुई कहानियाँ या गद्यांश ही लिख डाला।
- अंधविश्वास के कारण सुधा को अपना बेटा खोना पड़ा - अंधविश्वास में तीलियों के खेल तथा मौलवी द्वारा फूँक डलवाने घटना भी बहुत छात्र स्पष्ट नहीं कर पाए।
- 'चेहरे का रंग उड़ना', 'घी के दीये जलाना' - ये दोनों मुहावरे अस्पष्ट रहे।

(c)  $f o | k f f l z k a d s f y , l q - k o \%$

- पाठ को ध्यान से पढ़ना चाहिए तथा प्रश्नोत्तरों को ध्यान में रखते हुए पुनरावृत्ति करनी चाहिए।
- वर्तनी में सुधार लाने के लिए प्रश्नोत्तर लिखकर उसका अभ्यास करना चाहिए।
- अपने सहपाठियों के साथ पाठ से सम्बन्धित विषय पर चर्चा करनी चाहिए।
- यदि विषय स्पष्ट न हो, तो अध्यापक से उसकी स्पष्टता के लिए बार-बार पूछना चाहिए।
- पाठ के संभावित प्रश्नों पर विस्तार से चर्चा करनी चाहिए।
- 'हिन्दी वैकल्पिक विषय है' - ये सोचकर उसके प्रति लापरवाही नहीं बरतनी चाहिए।
- परीक्षार्थियों को पूरे मनोयोग से अपना पाठ पढ़ना चाहिए, उसपर मनन करना चाहिए, उसपर विचार करना चाहिए तभी पाठ की विषयवस्तु पूरी तरह समझ में आएगी।
- पिछले साल के प्रश्नोत्तरों का लिख कर अभ्यास करना चाहिए।
- विषय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखकर एवं अच्छी तरह से पुनरावृत्ति कर स्वयं को परीक्षा के लिए तैयार करना चाहिए।
- समय नियोजन का ध्यान रखना आवश्यक है ताकि समय पर सारे प्रश्नोत्तर पूरे किए जा सकें।
- सारे प्रश्नोत्तर लिखें, समयभाव के कारण कोई प्रश्न छूट न जाए, इसका ध्यान रखना चाहिए।